THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): That is enough. That is all. Shrimati Sushma Swaraj. *(Interruptions).*

SHRI S.S. AHLUWALIA: No. At the time of starting the Railway Budget in Lok Sabha, he was present there. *(Interruptions).* It is an insult to the House. *(Interruptions).* How can you allow that?

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): You have made your say. He has given the reply and I have given my ruling. What else do you want?

SHRI S.S. AHLUWALIA: I am not satisfied.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Let him speak.

THE BUDGET (RAILWAYS) 2008-09
GENERAL DISCUSSION

श्रीमती सुषमा स्वराज (मध्य प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, संसद की कुछ परंपराएं, संसदीय गरिमा के नाम पर जानी जाती हैं। वे पार्लियामेंट्री प्रोप्राइटीज कहलाती हैं। यह भी एक प्रोप्राइटी है कि दोनों सदनों में जब बजट, रेल बजट या राष्ट्रपति अभिभाषण पर चर्चा प्रारंभ होती है, तो राष्ट्रपति अभिभाषण के समय स्वयं प्रधान मंत्री और बजट और रेल बजट के समय वित्त मंत्री और रेल मंत्री उपस्थित रहते हैं। रेल मंत्री जी यह तर्क दें कि लोक सभा में बहस चल रही है। तो शायद समझ में आ जाए, लेकिन हमारे अपने हाउस की रूलिंग पार्टी के चीफ विप्प, जो स्वयं राज्य सभा के सदस्य हैं, वे यह तर्क दें, तो बात समझ से परे है। अगर दोनों सदनों में चर्चा चल रही है, तो मिनिस्टर ऑफ स्टेट लोक सभा में रह सकते हैं। क्योंकि वहां चर्चा दो दिन पहले प्रारंभ हो चुकी है, वहां साधारण रूप से चर्चा चल रही है, यहां चर्चा की शुरूआत हो रही है। चर्चा की शुरूआत में यहां रेल मंत्री रहते और श्री वेलू जी उतने समय लोक सभा में रह लेते तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ सकता था। लेकिन शायद कुछ परंपराएं हैं, सरकार ने तय किया है कि उनका निर्वहन नहीं करना है तो मुझे कुछ ज्यादा नहीं कहना है। मैं लालू जी को बधाई देकर अपनी बात शुरू करना चाहती थी, परंतु वे बधाई लेने के लिए यहां उपस्थित नहीं हैं, तो नुकसान उनका है। The loss is his, not mine. जिस तरह से उन्होंने रेल मंत्रालय संभाला है, तब से कभी आई॰आई॰एम॰ (अहमदाबाद) के छात्र उनसे वित्त प्रबंधन का प्रशिक्षण लेने आते हैं, कभी हार्वर्ड विश्वविद्यालय से उन्हें लेक्चर देने के लिए बुलाया जाता है। लालू जी से मेरा बहुत पुराना संबंध हैं वे मेरे स्नेही भाई हैं और मैं उनकी प्यारी बहिन हूं। मेरा माथा गर्व से ऊंचा होता है कि भारत के एक मंत्री ने अमरीका जैसे मुल्क से अपना लोहा मनवा लिया। लेकिन उपसभाध्यक्ष जी, यह वरदान भी शायद बहनों को ही मिला है कि उनके भाई कितने ही चतुर सुजान क्यों न हों,बहनें उनकी चतुराई भाँप लेती हैं। शायद आपको भी घर में यह अनुभव हुआ होगा। लड़के मां-बाप को चकमा दे जाते हैं, छोटे भाइयों को भी मूर्ख बनाने में कामयाब हो जाते हैं, लेकिन बहनों की आँख से उनकी कोई हरकत छिपी नहीं रहती है। वह उनकी हर कारीगरी जानती है और समय-समय पर उसे उगल भी देती है। उसी ईश्वरीय वरदान के तहत, जब मैं इस बजट भाषण को पढ़ रही थी तो लालू भई की एक -एक चतुराई मेरे सामने खुल-खुल कर सामने आती जा रही थी। फिर मैंने उनके पुराने चार के चार बजट भाषण मंगाकर पढ़े तो सभी कुछ मेरे सामने शीशे की तरह स्पष्ट हो गया।

उपसभाध्यक्ष जी, रेल मंत्री ने रेल के कायाकल्प को इस भाषण में जादुई कायाकल्प कहा है। अगर आप इनके बजट भाषण का पैरा 62 ओर 63 देखें तो उन्होंने कहा कि मैंने रेलवे का जादुई कायाकल्प किया है और उनकी स्पीच का जो दूसरा भाग है, उसमें तो उन्होंने एक दोहा ही पढ़ दिया है। उन्होंने कहा है - ''जादू-टोना हमने दिखाया था पिछले साल, इस बार पूरा इंद्रजाल देख लीजिए।'' जादू की यह खासियत होती है कि उसनें जो दिखता है, वह वास्तव में घटता नहीं है। मुझे बचपन की एक घटना याद आई। हमारे शहर अंबाला में एक जादूगर खेल दिखाने आया था। उसने डुगडुगी पिटवाई कि मैं मैदान में खेल दिखाने आऊंगा। सारे मोहल्ले के बच्चे खेल देखने जा रहे थे, मैं भी अपने भाई के साथ चली गई। उसने कई तरह के खेल दिखाए। उसके बाद उसने एक चादर बिछा दी और जोर से बोला - जय काली कलकत्ते वाली, तेरा वचन न जाए खाली, छू मंतर और पूरी चादर पर नोट ही नोट बिखर गए। एक-दो और खेल

दिखाकर जादू खत्म हो गया और जब जादू खत्म हुआ तो वह अपना कटोरा लेकर सबके सामने पैसा लेने के लिए चला। मां ने चलते समय हम दोनों बहन-भाईयों को चवन्नी-चवन्नी दी थी। उस समय चवन्नी की बहुत कीमत होती थी। हमने वह चवन्नी उसे दे दी। जब मैं वापस आ रही थी तो मेरे मन में एक प्रश्न बार-बार उठ रहा था। एक सवाल मुझे बार-बार टटोल रहा था। मैंने अपने भाई से पूछा, भैया, यह जादूगर इतने नोट बना सकता है, इतना अमीर है तो फिर यह हमसे छोटे-छोटे पैसे क्यों मांगता है? उस समय भाई ने मुझे एक बात कही थी कि पगली, जादू में जो होता है, वह दिखता नहीं है। जादू सच नहीं दिखाता, यह तो जादूगर की हाथ की सफाई है। वह निगाह बांध देता है, इसलिए वह जो दिखाता है, केवल वही दिखता है, सच नहीं दिखता है। मुझे लगा कि शायद लालू जी ने सच बोला है कि यह जादुई कायाकल्प है, क्योंकि वास्तव में बजट भाषण में जो दिख रहा है, वह हुआ नहीं है, वह घटा नहीं है। लेकिन जादू-टोना करके एक जादूगरी का कमाल लालू जी ने जरूर दिखाया है। उपसभाध्यक्ष जी, उन्होंने अपने भाषण की शुरूआत एनडीए को कोसने से की है। हमारे कार्यकाल की कस कर आलोचना की है। अपने भाषण के तीसरे नम्बर के पैरा में ही जहां से असली भाषण शुरू होता है, उनहोंने कहा है, "महोदय, यूपीए सरकार बनने से पूर्व रेलवे की वित्तीय स्थिति क्या थी, किसी से छिपा नहीं है। रेलवे एक ऐसे गम्भीर वित्तीय संकट से जूझ रही थी कि वह भारत सरकार को डिविडेंड देने से भी चूक रही थी और गतायु सम्पत्तियों को समय रहते बदलने की स्थिति में नहीं थी। आज जब इसका वित्तीय कायकल्प हो गया है, तो वही लोग इसका श्रेय लेने के लिए बड़े-बड़े दावे कर रहे हैं।" इसके बाद उन्होंने एक शेर पढ़ा। "उजड़ा चमन जो छोड़ गए थे हमारे दोस्त, अब बात कर रहे हैं वे फसले बहार की"। उपसभाध्यक्ष जी, यह आरोप सत्य से परे है। उन्होंने हम पर पहला आरोप लगाया है कि एनडीए के समय में डिविडेंड नहीं दिया गया था। मैं वे आँकड़े आपके सामने सदन में रखना चाहूँगी। ...(**व्यवधान**)... लालू भाई आ गए। लालू भाई, मैंने तो आपको बधाई दी थी, लेकिन आप थे ही नहीं, तो मैं क्या करूँ। अब आप बधाई वाला पार्ट बाद में पढ़ लीजिए, मैं सब चीजें दोबारा तो कहूँगी नहीं। ...(**व्यवधान**)...

रेल मंत्री (श्री लालू प्रसाद): महोदय, Sorry, मैं टाइम पर नहीं आया। हमारे मंत्री यहां थे। आपका क्वार्टर नजदीक है। आपसे हमारी बात हुई, आप भी लंच करने गईं और मैं भी गरम-गरम बनवा ही रहा था। मैं आपके नाम पर खाना छोड़ कर चला आया।

श्रीमती सुषमा स्वराज: बहनें खाना खिलाती हैं, छुड़वाती नहीं हैं। अगर मैं खाकर चली आई, तो आप भी खाकर आ जाते।

श्री एस.एस. अहलुवालिया (झारखंड): आपके मंत्री ने कहा कि आप लोक सभा में बैठे हैं। फिर गुमराह कर दिया। उन्होंने रिकार्ड पर कह दिया कि आप लोक सभा में बैठे हैं।

श्रीमती सुषमा स्वराज: चीफ व्हिप ने भी कहा कि लोक सभा में बैठे हैं और वेलू जी ने भी कहा कि लोक सभा में बैठे हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Laluji, she was sorry that you did not hear her when she complimented you. That is the point.

श्रीमती सुषमा स्वराज: अब मेरे गले में टेप थोड़े ही लगा है कि वैसे का वैसा कैसेट दोबारा चला दूंगी। आप उतना पढ़ लीजिए, लेकिन अब मैं आपके उस आरोप से शुरू कर रही हूं, जो आपने एनडीए के कार्यकाल के बारे में लगाया और आपने एक शेर पढ़ा। "उजड़ा चमन जो छोड़ गए थे हमारे दोस्त, अब बात कर रहे हैं वे फसले बहार की"।आपने कहा कि हमने डिविडेंड नहीं दिया। आपने कहा कि हमने गतायु सम्पत्तियों को समय रहते नहीं बदला। यह आपका आरोप है न लालू भाई यह आपका आरोप है। मैं आपके सामने वह डिविडेंड का आंकड़ा रखना चाहती हूं, जो आपके आने से तीन वर्ष पहले तक 2001 में, 2002 में और 2003 में रेलवे के द्वारा दिया गया था। किस अधिकारी ने आपको यह कहा कि हमने डिविडेंड नहीं दिया था। मैं आपके सामने वह आंकड़ा रखती हूं। महोदय, सन् 2001-02 में 1337 करोड़ 18 लाख रुपए, 2002-03 में 2714 करोड़ 85 लाख रुपए और 2003-04 में 3387 करोड़ 8 लाख रुपए, उसके बाद जब आप आए, तो आपने 3199 करोड़ 31 लाख रुपए का डिविडेंड दिया। लेकिन आपसे पहले तीनों साल का डिविडेंड नीतीश कुमार के शासन काल में, एनडीए के शासन काल में रेलवे ने दिया। उपसभाध्यक्ष जी, मैं यहां आपको यह भी बता दूं कि वित्त मंत्रालय ने सलाह दी थी कि रेलवे डिविडेंड defer कर दे, लेकिन उस सलाह को न मानते हुए भी पूरा डिविडेंड दिया। अगर आप उससे पहले की बात कर रहे हैं, तो लालू भाई, मैं आपके सामने कहना

चाहती हूं कि वह उस अर्थव्यवस्था का परिणाम था, जो हमें विरासत में मिली थी, लेकिन हम जो अर्थव्यवस्था आपको विरासत में देकर गए हैं, उसमें तीन साल तक लगातार रेलवे डिविडेंड देता रहा था और उसके बाद आप रेलवे का डिविडेंड दे रहे हैं। यह आरोप सत्य से भी परे है और तथ्य से भी परे है।

आपने दूसरा आरोप लगाया कि रेलवे गतायु सम्पत्तियों को समय रहते बदलने की स्थिति में नहीं था। आप इससे ज्यादा भ्रामक प्रचार नहीं कर सकते। मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि क्या यह सच नहीं है कि सन् 2001 में अक्टूबर महीने में जब नीतीश कुमार रेल मंत्री थे, तो उन्होंने अपने शासन काल में 17,000 करोड़ रुपए से एक विशेष रेल संरक्षा निधि का सृजन किया था, SRSF&Special Rail Safety Fund बनाया था और क्या यह सच नहीं है कि केवल फंड का सृजन नहीं हुआ था, उन्होंने रेल पथ का नवीकरण करने का काम, उन्होंने पुलों को नया बनाने का, बदलने का काम अपने समय में केवल प्रारम्भ नहीं किया था, बल्कि आधे से ज्यादा पूरा कर दिया था? लालू भाई, मैं अपनी ओर से नहीं कह रही, मैं आपका बजट भाषण यहां पढ़ कर सुनाना चाहती हूं। याद करिए, 6 जुलाई, 2004 को आपने पहला बजट भाषण दिया था। लालू भाई, ज़रा आप ध्यान दीजिए। 6 जुलाई, 2004 को आपने सदन में रेल मंत्री के नाते पहला बजट भाषण दिया था। मैं उसका पैरा 10 और पैरा 11 आपको पढ़ कर सुनाना चाहती हूं। महोदय, आप ध्यान देंगे। यह लालू भाई का भाषण है, यह मैं नहीं कह रही हूं।

"रेलपथ, पुलों, चल स्टॉक और सिगनल गियरों की गतायु परिसंपत्तियों के नवीकरण के बकाया कार्यों के साथ-साथ संरक्षा संवर्धन संबंधी कार्यों को पूरा करने हेतु 6 वर्ष तक की अवधि के लिए 01.10.2001 से 17 हजार करोड़ रुपये की विशेष रेल संरक्षा निधि का सृजन किया गया था। इस निधि के अंतर्गत स्वीकृत विभिन्न कार्यों को पूरा करने के संबंध में काफी प्रगति हुई है।"

यह बात यह कह रहे हैं, मैं नहीं कह रही हूं।

"31.03.2007 तक पूरा किए जाने वाले 16,538 किलोमीटर के कुल निर्धारित लक्ष्य में से 31.3.2007 तक 8,938 किलोमीटर रेलपथ का नवीकरण कर लिया गया है।"

यह आप कह रहे हैं।

"441 स्टेशनों पर गतायु सिगनल प्रणालियों के बदले आधुनिक प्रणालियों का कार्य पूरा किया जा चुका है।"

यह आप कह रहे हैं

"1,053 अन्य स्टेशनों पर कार्य प्रगति पर है। 2003-2004 के दौरान 387 लेवल क्रासिंगों पर सिगनलों के साथ इंटरलॉकिंग का कार्य पूरा कर दिया गया है। इस प्रकार 16,549 चौकीदार वाली लेवल क्रासिंगों में से 7,095 पर इंटरलॉकिंग का कार्य पूरा कर लिया गया है। 90 चुनिंदा लेवल क्रासिंगों पर दुर्घटनाएं कम करने की दृष्टि से नजदीक आने वाली गाड़ी की चेतावनी देने के लिए ट्रेन एक्च्युएटेड वार्निंग डिवाइस (टी.ए.डब्ल्यू.डी.) की व्यवस्था की गई है। यह उपकरण सड़क उपयोगकर्ताओं और चौकीदारों को आने वाली गाड़ी की चेतावनी एक फ्लैशिंग लाइट और सायरन के द्वारा देगा। विशेष रेल संरक्षा निधि के अंतर्गत लगभग 5,300 स्थलों पर ट्रैक सर्किटिंग संबंधी कार्य प्रगति पर हैं लगभग 1,700 स्थलों पर कार्य अब तक पूरा कर लिया गया है।" आगे आप कहते हैं, "2700 पुलों में से 1306 पुलों का कार्य 31.03.2004 तक पूरा कर लिया गया है"।

मैं आपसे केवल एक बात पूछना चाहती हूं अक्तूबर 2001 को रेल मंत्री कौन था? मैं आपसे यह पूछना चाहती हूं कि सरकार किसी थी? 31.03.2004 को रेल मंत्री कौन था? सरकार किसी थी? लालू भाई, आप तो मई, 2004 में आए और जुलाई 2004 की 6 तारीख को आपने यह भाषण दिया। आपका कार्यकाल केवल डेढ़ माह का ही पूरा हुआ था, तो आप सच बोलने से नहीं झिझके। यह आपने ही सदन में कहा है। लेकिन आज जब आपको चार साल होने को आए तो आपके अधिकारियों ने आपको धोखा दे दिया। उन्होंने सारी पुरानी बातें भुलवा दीं। शायद उन्होंने सोचा होगा कि चार साल पुरानी बात सदन में किसको याद रहेगी, लेकिन वे भूल गए कि आपकी एक अपनी बहन भी इस सदन के अंदर

है, जो आपकी हर बात की जानकारी रखती है। जो आपकी सारी कारगुजारी जानती है। मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि प्रिडिसैसर-सक्सैसर सिंडॉम तो होता है, पूर्ववर्ती मंत्री और वर्तमान मंत्री में तनातनी का रिश्ता भी होता है, लेकिन किए हुए काम की इस तरह से अनदेखी करना कृतघ्नता होता है, लालू भाई।

मेरी दिक्कत यह है कि नीतिश भी मेरे उतने ही स्नेही भाई हैं, जितने कि आप। एक भाई जब दूसरे भाई कि निन्दा करता है, तो बहन को बुरा लगता है और वह भी अगर बेवजह करे तो गुस्सा आता है। शायद मैं इस रेल बजट पर बोलती

4-00 P.M.

भी नहीं, अगर आपने इस तरह से उनकी निन्दा न की होती। सक्सैर्स तो और भी आए हैं, अन्य मंत्रालयों के भी आए हैं। मेरे भी सक्सैर्स आए हैं, स्वास्थ्य मंत्रालय में मेरे उत्तराधिकारी मंत्री आए हैं, श्री अन्बूमणि रामदास। मेरा उनसे कोई बहुत मित्रता का रिश्ता नहीं है। शायद चार बरस में केवल दो बार ही बात हुई होगी, लेकिन पिछले ही सत्र में यहां स्वास्थ्य मंत्रालय के वर्किंग और कार्यकलाप पर चर्चा हो रही थी।

मैं स्वयं जान बूझ कर चर्चा में भाग नहीं ले रही थी। लेकिन अन्य लोगों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए डा॰ रामदास ने मेरे सभी initiatives को इस सदन में खड़े होकर acknowledge किया था मैं भी उनकी predecessor हूं। वे भी मेरे successor हैं। मैं आपको केवल दिखाने के लिए यह लाई हूं। मैं यहां नहीं बैठी थी कि वे मुंह-देखा टीका निकाल रहे हों, जिस समय वह यह बात कह रहे थे। मुझे तो वृंदा जी ने बताई, तो मैंने मंगाकर पढ़ी कि उन्होंने क्या कहा। यह रामदास जी की स्पीच है। वह इसी सदन में खड़े होकर, पिछले सत्र में हैल्थ मिनिस्ट्री की वर्किंग का रिप्लाई देते हुए कह रहे हैं-"Sir, I have a good predecessor. Shrimati Shushma Swaraj was one of the best Health Ministers. She was my predecessor. She had initiated a lot of programmes, which I am continuing today. In fact, the Prime Minister's Swasthya Suraksha Yojna was her brain-child." यह उन्होंने कहा। उसके बाद उन्होंने कहा-"Shushmaji had done a wonderful job in propagating the Indian system and we are trying to propagate it, not only in our country but all over the world." और जब मुझे यह पता चला, तो उसके बाद मैं स्पेशल समय लेकर--सर, उस समय आप ही चेयर पर थे। आपको याद होगा कि मैंने आपसे पांच मिनट का समय मांगा था और उस समय का उपयोग करते हुए मैंने सदन में खड़े होकर कहा था-''मैंने इस चर्चा में जान-बूझ कर भाग नहीं लिया था, क्योंकि मुझे लगता था कि predecessor-successor syndrome की बात कह कर शायद मेरी बात की objectivity पर question mark लग जाएगा। लेकिन मैं मंत्री महोदय की आभारी हूं, जिस उदारता और जिस सदाशयता से उन्होंने मेरी इनिशिएटिव्स को एक्नॉलेज किया है, सदन में उन बातों को रखा है। मैं उन्हें कहना चाहती हूं कि बहुत कम लोगों में यह जेनेरॅसिटी होती है। लोग आम तौर पर predecessor की खामियों को निकालते हैं, लेकिन सारा क्रेडिट स्वयं लेते हैं, लेकिन आपने इतनी बार उन बातों का जिक्र किया है, मैं मन से आपकी आभारी हूं। आपकी इस जेनेरॅसिटी के लिए आपका बहुत धन्यवाद करती हूं।

लालू भाई, इस तरह की परम्परा से लोकतंत्र मजबूत होता है। यही संसदीय गरिमा है कि हम अपने पूर्ववर्ती मंत्री की अच्छी की हुई बातों को स्वीकारें और स्वयं उससे भी ज्यादा बेहतर करें ताकि उसके बाद लोग हमारी सराहना करें। लेकिन आपने तो नीतिश जी को चिढ़ाने की कोशिश की है। मैं बिहार की आपकी राजनीति की मजबूरी समझ सकती हूं कि नीतीश कुमार की बड़ाई आप नहीं कर सकते। आपकी जुबान रूकती है। मगर लालू भाई, आप चुप तो रह सकते थे। आप मौन तो रह सकते थे। आपने तो एक दोहा पढ़ दिया:

उजड़ा चमन जो छोड़ गए थे हमारे दोस्त।

अब बात कर रहे हैं वह फसल-ए-बहार की।।

लालू भाई, यहां दोहा तो यह आना चाहिए कि:

जब पड़ा वक्त, गुलिस्तां पे खून हमने दिया।

अब आई बहार तो कहते हैं तेरा काम नहीं।।

मैं आपको याद दिलाना चाहती हूं कि जिस समय रेलवे जर्जर अवस्था में थी, आखिरी सांसे गिन रही थी, रेलवे की परिसम्पत्तियां आउटडेटेड हो गई थीं, उस समय उस दूरदर्शी नीतीश कुमार ने यह निर्णय किया था, महत्वाकांक्षी फैसला किया था कि जब तक इन पटरियों का नवीकरण नहीं होगा, जब तक इन पुलों को नया नहीं किया जाएगा, रेल न यात्री ढो सकेगी, न माल ढो सकेगी और 17 हजार करोड़ रुपए का 'रेलवे स्पेशल फंड' बनाकर उसने सुपर सोनिक स्पीड पर काम शुरू किया था। यही कारण था कि 16,538 किलोमीटर में से 8,938 रेल पथ नये करके आपको देकर वह गया है। 2700 पुलों में से 1306 पुल नए करके आपको देकर वह गया। आज जो आपकी गाड़ियां अतिरिक्त लदान से भर कर आपको इतना-इतना मुनाफा कमवा रही हैं, अगर यह रेल पथ का नवीकरण नहीं हुआ होता, अगर यह पुलों का नवीकरण नहीं हुआ होता, अगर इस ''विशेष रेल संरक्षा निधि'' का सृजन नहीं हुआ होता, अगर उन गतायु सम्पत्तियों को समय रहते न बदला गया होता, तो एक मन अतिरिक्त लदान भी लेने की हालत में आपके रेलवे में नहीं थी, वह उलटती-पलटती चलती। इसलिए मैं आपसे कहना चाहती हूं कि कृतघ्नता मत दिखाइए। जो काम वह करके गए हैं, कम से कम उसका श्रेय उन्हें लेने दीजिए। आज जो काम आप कर रहे हैं, यह उसी पौधे का फल खा रहे हैं, जो पौध वह अपने खून-पसीने से लगाकर गया था, सींच कर गया था। उस 17 हजार करोड़ में आपने एक रुपया भी जोड़ा नहीं है। आपके हर भाषण में उसी रेल संरक्षा निधि का जिक्र आता है..। और वही 16538 कि॰मी॰ रेल पथ आप 2007 तक नया कर रहे हैं उसमें एक किलोमीटर भी आपने जोड़ा नहीं है।

लालू भाई, इसके बाद मैं आपके अपने दावों पर आती हूं। आपका पहला दावा है, आपने यात्री भाड़ा नहीं बढ़ाया बल्कि यात्री भाड़े में कमी करके मुनाफा कमाया है। लालू जी, मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि भाड़े की परिभाषा क्या होती है? मेरी राय में तो शायद भाड़ा, उस राशि को कहते हैं जो यात्री अपनी यात्रा के एवज में रेलवे को देता है। आप कहते हैं आपने यात्री भाड़ा नहीं बढ़ाया, आपने ''तत्काल'' का एक ऐसा इंद्रजाल बिछाया है कि उस इंद्रजाल की चकाचौंध में कुछ पता ही नहीं चल रहा है। मैंने पिछली बार भी यह बात आपके सामने रखी थी। उपसभाध्यक्ष मदोदय, रेलवे में एक तत्काल नाम का कोटा होता था। हमारे समय में भी होता था क्योंकि कुछ लोगों को अचानक सफर करना पड़ता है-कोई घर में बीमारी आ गई, कोई शादी-ब्याह आ गया, अचानक किसी की मृत्यु हो गई, तो तत्काल सफर करना पड़ता है। हमारे समय में यह कोटा 10 परसेंट था, हमारे समय में यह कोटा 24 घंटे पहले शुरू होता था क्योंकि तत्काल का अर्थ ही यह है। तत्काल शब्द की परिभाषा से हमारी नीति मेल खाती थी, 10 परसेंट टिकटें 24 घंटे पहले मिलेंगी। अगर किसी को अचानक आवश्यकता पड़ जाए तो 50 रुपया द्वितीय श्रेणी के लिए और 100 रुपया उच्च श्रेणी के लिए देकर आप वह टिकट खरीद सकते थे। लालू जी ने क्या किया है? वह कोटा 10 परसेंट से बढ़ाकर 30 परसेंट कर दिया, एक दिन के बजाय उसको पांच दिन कर दिया। अब ज्यादातर ट्रेंस में 70 परसेंट टिकटें साधारण बिकती हैं और 70 परसेंट टिकटें देने के बाद काउंटर बंद हो जाता है, बाकी 30 परसेंट टिकटें आपको तत्काल में ही लेनी पड़ती हैं। आप कहेंगे क्या फर्क पड़ता है तत्काल में लेने में? जो फर्क पड़ता है, वह मैं बताती हूं। पहले जो चार्ज 50 रुपया और 100 रुपया अतिरिक्त हमने रखा था, वह बढ़ाकर अब 100 रुपया और 300 रुपया कर दिया गया है, यानी द्वितीय श्रेणी की टिकट पर 100 रुपया ज्यादा देना पड़ेगा व उच्च श्रेणी की टिकट पर 300 रुपया ज्यादा देना पड़ेगा। यह पहला फर्क है। दूसरा फर्क, तत्काल में जहां से आपको चलना है और जहां जाना है, वहां तक की टिकट नहीं मिलती, जहां से गाड़ी चलती है और जहां गाड़ी पहुंचती है, वहां तक की टिकट लेनी जरूरी होती है। जैसे अगर आपको दिल्ली से चढ़ना है और भोपाल तक जाना है तो तत्काल कोटा में टिकट दिल्ली से भोपाल की नहीं मिलेगी। अगर ट्रेन अमृतसर से दादर तक जा रही है तो आपको मजबूरन टिकट अमृतसर से दादर तक की लेनी पड़ेगी। यह दूसरा फर्क है। तीसरा फर्क, अगर आप तत्काल का रिफंड लेने जाएं तो वह केवल 24 घंटे से पहले मिलेगा और कुल किराए का केवल 25 फीसदी रिफंड मिलेगा और अतिरिक्त आपने 100 रुपया व 300 रुपया दिया है, उसका रिफंड नहीं मिलेगा। मैं पूछना चाहती हूं 5 दिन पहले तत्काल कोटा का शुरू होना, 30 परसेंट टिकटों का लाजिमी तौर पर तत्काल कोटा के रूप में जाना, जहां से गाड़ी चलती है वहां से लेकर और जहां गाड़ी पहुंचती है वहां तक की टिकट का मजबूरन लेना, इस मजबुरी में आपने भारत के यात्रियों को डाला है, और आप कहते हैं कि आपने यात्री भाड़ा नहीं बढ़ाया है। मुझे तो यह भी जानकारी मिली है कि कुछ गाड़ियों में तत्काल की बुकिंग 60 दिन पहले होती है। कहीं तत्काल की परिभाषा आपने 60 दिन पहले सुनी है, लेकिन इन्होंने तत्काल की बुकिंग भी 60 दिन पहले करने का काम किया है।

इसी तरह से concellation charges भी 10 रुपया और 20 रुपया बढ़ा दिए हैं। एक और खेल इंद्रजाल में आपने खेला है, वह है सुपर फास्ट ट्रेंस का। 80 परसेंट से ज्यादा गाड़ियों का नाम बदल कर सुपर फास्ट रख दिया और टिकट में उसका भाड़ा 20/-रुपए, 25/-रुपए, बढ़ा दिया। वे गाड़ियां न सुपर बनी हैं, न फास्ट, केवल उनका नाम बदला है और वहां 20/-रुपए, 25/-रुपए, बढ़ाने का काम हुआ है।

रिटर्न जर्नी और ओनवर्ड जर्नी, उपसभाध्यक्ष जी, अगर आप एअर टिकट लेने जाएं और वापसी का टिकट साथ लें, तो सस्ता मिलता है, क्योंकि आप दो टिकट ले रहे हैं, मगर इन्होंने कहा है कि अगर रिटर्न जर्नी का टिकट आप साथ बनवाओगे तो 20/-रुपया, 25/-रुपया, फालतू देना होगा। मैं कहना चाहती हूं कि एक तरफ तो आप यह कर वाहवाही लूटते हैं कि आपने यात्री भाड़ा नहीं बढ़ाया और दूसरी तरफ आप जहां से भी पैसा वसूल सकते हैं उस तरह से वसूल कर यात्रियों की कमर तोड़ रहे हैं। लालू भाई, आप गुम चोट मारने में माहिर हैं। आप गुम चोट मार रहे हैं और आप जानते हैं कि गुम चोट दिखती नहीं है, लेकिन साधारण चोट से ज्यादा दर्द करती है, इसलिए आप यह काम मत करिए। जिस तरह आप यात्री भाड़े में कर रहे हैं, उसी तरह आप माल भाड़े में भी काम कर रहे हैं। आप कहते हैं कि आपने माल भाड़ा नहीं बढ़ाया, लेकिन मैं पूरी जिम्मेदारी से यहां खड़े होकर कहना चाहती हूं कि लालू जी ने कभी संसद में आकर माल भाड़ा नहीं बढ़ाया, लेकिन संसद को विश्वास में लिए बिना अपने मंत्रालय से अधिसूचना जारी करके बीसियों बार माल भाड़ा बढ़ाया हैं। मैं यह पूरी जिम्मेदारी से कहती हूं कि आपके शासन-काल में माल भाड़े में हर वर्ष 7 प्रतिशत की औसत वृद्धि हुई है और यह केवल औसत वृद्धि की बात नहीं, बल्कि खाद्यान्न और खाद के भाड़े में तो 20 और 25 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। खाद और यूरिया में 20 परसेंट की आपने वृद्धि की है, वर्ष 2006-07 में खाद का माल भाड़ा 70 पैसे प्रति टन किलोमीटर था, इसे आपने 2007-08 में बढ़ाकर कितना कर दिया? 77 पैसे प्रति टन। वर्ष 2006-07 में खाद्यान्न का माल भाड़ा 60 पैसे प्रति टन किलोमीटर था, उसे आपने कितना कर दिया? 73 पैसे प्रति टन, यानी 25 परसेंट की वृद्धि और आप कहते हैं कि आपने माल भाड़ा नहीं बढ़ायां। मैं यह आंकड़े यहां खड़े होकर जिम्मेदारी से सदन में रख रही हूं।

उपसभाध्यक्ष जी, आप जानते हैं कि आज रेलवे का नेशनल फ्रेट में क्या शेयर है? कुल 35 फीसदी। आजादी के समय नेशनल फ्रेट शेयर में रेलवे का हिस्सा 89 परसेंट था। वर्ष 1960 के आसपास एक पांडे कमेटी बनी थी। उसने कहा था कि नेशनल फ्रेट में कम से कम 70 से 75 परसेंट शेयर रेलवे का होना चाहिए। अगर उतना संभव नहीं, तो आप देखें, यूरोपियन यूनियन ने यह कहा है कि विश्व के हर देश में कम से कम 50 फीसदी शेयर रेलवे का होना चाहिए। लेकिन, आप जानते हैं कि आज आपका कितना शेयर है? माल में 35 फीसदी, यात्री परिवहन में 20 फीसदी। एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट में भी आपका नेशनल शेयर घटा है और आप बात करते हैं कि माल भाड़े में वृद्धि नहीं की। आपने माल भाड़ा भी बढ़ाया है। यह ठीक है कि यात्रियों की संख्या बढ़ी है,लेकिन मैं हिस्सेदारी की बात कर रही हूं, रेलवे की हिस्सेदारी नेशनल फ्रेट शेयर में घटी है और वह 35 परसेंट पर आकर खड़ी है।

उपसभाध्यक्ष जी, फिर आप विकास की बात करते हैं। अर्थशास्त्र का यह स्थापित सिद्धांत है, लालू भाई, कि जिस दर से राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था बढ़ती है, उससे कम से कम दो परसेंट ऊपर परिवहन सेक्टर, ट्रांसपोर्ट सेक्टर की अर्थ-व्यवस्था बढ़ती है। आज वित्त मंत्री दावा करते हैं कि भारत की अर्थ-व्यवस्था 9 परसेंट के आधार पर बढ़ रही है, उस अनुपात में कम से कम रेलवे की ग्रोथ 10 परसेंट होनी चाहिए थी, लेकिन आपके अपने मुताबिक रेलवे की प्रस्तावित वृद्धि दर केवल 8 फीसदी है। यह आपके विकास दर का दावा है। आप दावा करते हैं, आपने 25 हजार करोड़ का कैश सरप्लस अर्जित किया है। किया है न दावा आपने, मैं पूछना चाहती हूं? अगर 25,000 करोड़ रुपए का यह कैश सरप्लस सही है तो आप ग्रॉस बजटरी सपोर्ट क्यों मांग रहे हैं? यह तो जादूगर वाली वही बात हुई,जो मैंने आपके आने से पहले कही कि चादर पर नोट दिखाता है, बाद में कटोरा लेकर पैसे मांगता है। मैं पूछना चाहती हूं आपसे कि आपके इस 25,000 कैश सरप्लस में से इन्वेस्टिबल सरप्लस कितना है? आपने रेलवे का एकाउंटिंग सिस्टम बदला है और यह बात मैं नहीं कह रही हूं, यह बात रेलवे के एक्स फाइनेंशियल कमिशनर्स कह रहे हैं। उपसभापति जी, अक्तूबर, 2007 में आउटलुक में एक आर्टिकल आया था, उस समय मैंने देखा था कि इनके एक्स फाइनेंशियल कमिशनर्स ने रेलवे बजट की पोल खोली थी, मैं वह आपके सामने पढ़कर सुनाना चाहती हूं। लालू जी, श्रीमती विजय लक्ष्मी विश्वनाथन, आपकी एक्स फाइनेंशियल कमिशनर, हैं - "The Railwa nder Lalu has altered the way the balance-sheet is presented. It has

resulted in revenue getting inflated artificially." यह मैं नहीं कह रही हूं, यह इनके रेलवे मंत्रालय की फॉरमर फाइनेंशियल कमिशनर कह रही हैं। दूसरी टिप्पणी - Shri R.R. Jeruhar, former Railway Board Member (Engineering), stated, "A large amount of money being shown as profit is not available to be ploughed back, part of it is in suspense account. Money promised to the Railway, but not given to it." यह मैंने नहीं कहा, यह आपके फॉरमर फाइनेंशियल कमिशनर्स कह रहे हैं। इसलिए मैं आपसे जानना चाहूंगी कि आपके पूर्ववर्ती मंत्री जिस तरह से बजट बनाते थे, जिन मदों के आधार पर बजट बनाते थे, आप क्या उसी तरह से बजट बना रहे हैं और पेश कर रहे हैं या आपने उसमें भी कोई जादूगरी करने का काम किया है? जादू है।

इसके बाद आप दावा करते हैं कार्यकुशलता का। कार्यकुशलता सबसे ज्यादा रेलवे की पंक्चुएलिटी में दिखाई देती है। आम आदमी रेलवे की कार्यकुशलता को देखता है - कितने बजे रेल छूटती है, कितनी बजे रेल पहुंचती है, क्या समय से छूटती है, क्या समय पर पहुंचती है। आम आदमी की रेलवे की कार्यकुशलता जांचने की यह एक ही कसौटी है। लेकिन, मैं आपकी कार्यकुशलता की पोल खोलती हूं, मैं स्वयं भुग्तभोगी हूं, किसी और की बात नहीं कर रही, लालू भाई। जिस दिन आप सदन में खड़े होकर अपना बजट पेश करते हुए अपनी पीठ थपथपा रहे थे, उसी दिन 26 फरवरी की रात को मेरे पति और आपके मित्र, श्री स्वराज जी को तमिलनाडु एक्सप्रेस से इटारसी जाना था। तमिलनाडु एक्सप्रेस रात को 10:30 बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से छूटती है। वे रात 09:45 बजे घर से चले गए। वहां से उनका रात 10:15 बजे फोन आया कि गाड़ी तो रात को 01:45 बजे छूटेगी, मैं वापिस आ रहा हूं, यहां बैठकर क्या करूंगा। वे वापिस आए। चूंकि रेल मंत्री आप थे, इसलिए उन्होंने कोसने का काम नहीं किया, मैं जानती हूं, कोई भी और रेल मंत्री होता तो वे उसको बहुत कोसते। वे चुपचाप आकर घर में लेट गए, लेकिन क्रोध और क्षोभ की रेखाएं उनके माथे पर साफ दिखाई दे रही थीं। मैं पूछना चाहती हूं आपसे कि जो गाड़ी दिल्ली से बनकर चलती है, पीछे से नहीं आती, अगर उस गाड़ी की यह हालत है कि वह रात 10.30 बजे की बजाए रात 01:45 बजे छूटती है तो उन गाड़ियों की क्या हालत होती होगी, जो पीछे से आती हैं? आप सोच सकते हैं, रात 01:45 बजे जाने का क्या मतलब होता है? सारा स्टाफ जागता रहा, वह ड्राइवर, जो उनको लेकर जाने वाला था, वह जागता रहा, उनके साथ उनके एक मित्र जाने वाले थे, उनका बेटा उन्हें छोड़ने आया था, वह हमारे घर में बैठकर 01:45 बजे तक जागता रहा। मैं पूछना चाहती हूं लालू भाई कि क्या इस तरह के परिवार के लोगों की कठिनाइयों को समझने का कोई खाता रेल मंत्रालय में है या नहीं? मैं यह गलतबयानी नहीं कर रही, आप जाकर अपने रेल मंत्रालय से पता लगवा लीजिए कि 26 तारीख की रात को तमिलनाडु एक्सप्रेस कितने बजे छूटी थी, पता लगवा लीजिए कि उस दिन श्री स्वराज कौशल उसमें सफर कर रहे थे या नहीं? मैं गलतबयानी नहीं कर रही हूं, लेकिन मैं आपको झकझोरना चाहती हूं कि जिन बातों का दावा आप बजट में करते हैं, उनको जमीन पर परिलक्षित होने दीजिए। स्टेशनों की टूटफूट, प्लेटफार्मों का रख-रखाव, गाड़ियों का साफ-सुथरापन, गाड़ियों का समय पर चलना और समय पर छूटना - ये वे दावे हैं, जो जमीन पर खोखले दिखाई देते हैं। इसलिए मैं आपसे कहना चाहती हूं कि अगर आप कार्यकुशलता का दावा करते हैं, तो उसकी मॉनीटरिंग भी करिए। एक और दावा आपने किया है - निर्माण कार्यों की प्रगति का। मैं आपसे पूछना चाहती हूं लालू भाई कि जिन बातों की आप घोषणा करते हैं, क्या कभी इनका रिव्यू भी करते हैं? आपने Dedicated freight corridor की घोषणा कब की थी, याद दिलाऊं आपको कि सन् 2005 के अपने बजट भाषण का जवाब देते हुए, आपने सदन में यह खुशी की खबर दी थी कि हम एक पूर्वी और पश्चिमी फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण करने जा रहे हैं, कहा था न? उसके बाद आपने अगस्त, 2005 में लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री के मुख से कहलवाया था कि हम एक पूर्वी और पश्चिमी फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण करने जा रहे हैं, कहलवाया था न? उसके बाद आपने अपने 2006-07 के बजट भाषण में इसे फिर दोहराया था। मैं बताती हूं आपको, आपने अपने भाषण में कहा था कि -''फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण - महोदय, मैंने 2005-06 के रेल बजट पर हो रही बहस का जवाब देते हुए, स्वर्णिम चतुर्भुज और उसके विकर्णों पर समर्पित फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण करने के महत्व से सदन को अवगत कराया था। मुझे सदन को यह जानकारी देते हुए खुशी हो रही है कि 22,000 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत पर पश्चिमी और पूर्वी भागों पर समर्पित, कंप्यूटराइज्ड कंट्रोलयुक्त मल्टी मॉडल हाई एक्सेल लोड फ्रेट कॉरिडोर की दोनों परियोजनाओं को इस वर्ष की कार्य योजना में शामिल किया गया है।'' यह आपका भाषण है 2006-07 का। वर्ष 2005-06 में आपने अवगत कराया, अगस्त, 2005 में प्रधान मंत्री जी से कहलवाया और 2006-07 के बजट भाषण में सदन को अवगत कराया। उसके बाद 2007-08 के भाषण में आपने क्या कहा? आपने

कहा कि - ''डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण - पूर्वी और पश्चिमी डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का निर्माण कार्य वर्ष 2007-08 में आरम्भ किया जाएगा,'' यह आपने कहा, यह आपका 2007-08 का भाषण है। वर्ष 2005 में आपको विचार आया, 2005 के अगस्त में प्रधान मंत्री ने कहा, 2006 और 2007 में आपने सदन में अवगत करा दिया, पूरा साल कुछ नहीं हुआ, 2007-08 में आपने कहा कि निर्माण कार्य आरम्भ हो जाएगा और इस बार फिर 2008-09 में मैं पैरा 78 आपको पढ़कर दिखाती हूं, जहां आपने कहा है कि - ''स्वर्णिम चतुर्भुज एचडीएन का सबसे व्यस्त एवम् महत्वपूर्ण हिस्सा है। मुझे सदन को यह सूचना देते हुए हर्ष हो रहा है कि लुधियाना से कोलकाता के निकट स्थित दानकोनी तक पूर्वी फ्रेट कॉरिडोर और दिल्ली से जेएनपीटी के बीच बनने वाले पश्चिमी कॉरिडोर को स्वीकृति दे दी गई है। मैं सम्मानित सदन को आश्वस्त करना चाहूंगा कि वर्ष 2008-09 के दौरान इन दोनों परियोजनाओं का निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया जाएगा।''

अगर आज स्वीकृति दी गई है, तो सन् 2006-07 में क्या था, 2007-08 में क्या था? आप 2007-08 में भी कहते हैं कि निर्माण कार्य आरम्भ हो जाएगा और 2008-09 में यानी इस बार के बजट भाषण में भी कहते हैं कि मैं सदन को आश्वस्त करना चाहूंगा कि निर्माण कार्य आरम्भ हो जाएगा। हम कैसे मानें आपका आश्वासन, कौन सी विश्वसनीयता इसके पीछे दिखाई पड़ रही है? इस आश्वासन के पीछे क्या है? एक डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर, जो आप की महत्वाकांक्षी परियोजना है, 2005 से 2008-09 तक सदन यह सुनता आ रहा है कि बनेगी, बनेगी, बनेगी, बनेगी, लेकिन अभी तक एक ईंट भी उस कॉरिडोर में नहीं लगी है, यह सच है। यह केवल फ्रेट कॉरिडोर का हाल नहीं है। रायबरेली में एक प्रोडक्शन फैक्टरी लगने वाली थी, क्या हुआ उसका? छपरा में एक फैक्टरी लगने वाली थी, क्या हुआ उसका? आप नयी दिल्ली के रेलवे स्टेशन को विश्व स्तरीय बनाने वाले थे, क्या हुआ उसका? सन् 2004 में बिहार में नवीनगर रेल बिजली कारखाना का शिलान्यास हो गया था, उसका क्या हुआ? लालू भाई, आपके Railway Development Authority से बजट होटल बनने वाले थे, उसका क्या हुआ? अगर मंत्रालय के मुखिया के मुंह से कही गई बातें पूरी नहीं होंगी तो लोग किस पर विश्वास करेंगे, यह मैं आपसे पूछना चाहती हूं? मैंने आपके 2005 से 2008-09 तक के भाषण को पढ़कर बताया है। हम आपके आश्वासन पर कैसे विश्वास करें, कैसे भरोसा करें? इस बार आपका पूरा भाषण भावी योजनाओं से भरा हुआ है, लेकिन यकीन नहीं होता कि वे योजनाएं पूरी होंगी, क्योंकि आप कछुए की चाल से चल रहे हैं।

मैं मध्य प्रदेश से आती हूं। मध्य प्रदेश में अभी आपने दाहौद-इंदौर-बरास्ता सरदारपुर और धार का 200.97 किलोमीटर रेलवे लाइन का भूमि पूजन करवाया है। आपने करवाया है न? यह 678 करोड़ रुपए की योजना है। आपने इसके लिए कितना प्रावधान किया है? आपने सिर्फ बीस करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। लालू भाई, अगर इसी गति से काम होगा तो इसे पूरा होने में तीस साल लग जाएंगे। रामगंज मंडी से भोपाल की 262 किलोमीटर पर रेलवे लाइन बिछाने की एक दूसरी परियोजना है, जो 628 करोड़ रुपए की परियोजना है। आपने इसके लिए सिर्फ तीस करोड़ का प्रावधान किया है। इस गति से काम होगा तो इसे पूरा होने में बीस साल लगेंगे। ललितपुर-सिंगरौली भी हम नई रेल लाइन चाहते थे, आपने बजट में इसके लिए एक भी पैसा नहीं दिया है। अगर इसी तरह से इतनी-इतनी कम राशि का प्रावधान करेंगे तो कैसे परियोजनाएं पूरी होंगी?

इसमें भी आपने नई पेंच लगा दिया है। आप राज्यों से कह रहे हैं कि आप पचास फीसदी पैसे दोगे तो हम आपके प्रस्ताव स्वीकार करेंगे। यह नई नीति कहां से आई है? आज तक सारी की सारी रेल लाइन रेल मंत्रालय अपने पैसे से बिछाती रही है, कभी राज्यों से एक पैसा नहीं मांगा और अब जबकि रेलवे पच्चीस हजार करोड़ कैश सरप्लस लेकर घूम रही है तो राज्यों से आपको पैसा चाहिए? आप तो स्वयं मुख्य मंत्री रहे हैं। आप जानते हैं कि राज्य सरकारें किस वित्तीय संकट से जूझ रही हैं। राज्य सरकारें कहां से पैसा लाएंगी? आप जरा कल्पना कीजिए, अगर आप मुख्य मंत्री होते और नीतीश कुमार रेल मंत्री होते और यह घोषणा उनके द्वारा होती तो आप क्या प्रतिक्रिया करते? लेकिन आज आप राज्यों से पैसा मांग रहे हैं।

मैं मध्य प्रदेश की बात करना चाहती हूं। मध्य प्रदेश में रेल लाइन का घनत्व पन्द्रह किलोमीटर प्रति सौ वर्ग किलोमीटर है, जब कि पूरी देश का औसत सौ वर्ग किलोमीटर के पीछे अठारह किलोमीटर है। अगर आप यह नीति लाए भी हैं तो कम से कम उन राज्यों, को बख्श दीजिए, जिन राज्यों की घनत्व राष्ट्रीय घनत्व औसतन से कम है। बाकी राज्यों

में अठारह किलोमीटर रेलवे ने, केन्द्र ने अपने पैसे से पूरा किया है। मध्य प्रदेश में वह अभी अठारह तक पहुंचा भी नहीं है और आपने उससे पैसा मांगना शुरू कर दिया। वह पैसा कहां से लाएंगे? हमें तो समझ नहीं आ रहा है। जो रेल लाइनें नई बिछ रही हैं, उसके प्रस्तावों पर खुशी मनाऊं या प्रधान मंत्री द्वारा किए गए भूमि पूजन पर झूमूं या आपके इस बीस करोड़ को देखकर रोऊं। आप बताइए कि राज्य सरकारें कहां से पैसा लाएंगी? कैसे उनके प्रस्ताव पूरे होंगे?

लालू भाई, दरअसल दिक्कत यह है कि आप कुछ भी करते हैं तो उसमें फच्चर फंसा देते हैं। आप एक तरफ कहते हैं कि भाड़े में कमी करेंगे तो दूसरी तरफ फच्चर फंसा देते हैं, जब कोचों में नई सीटें बढ़ेंगी, तब भाड़े में कमी आएगी। आप कहते हैं कि नई ट्रेनें चलेंगी ....(व्यवधान)...

रेल मंत्री (श्री लालू प्रसाद): आपने जो प्रसंग छेड़ा है, आप पहले पूरा पढ़ लीजिए ....(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैं हर चीज को पढ़ चुकी हूं ....(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: उसमें लिखा है कि जो नया एलएचबी कोच बना है, उसमें दस प्रतिशत ही रहेगा, बाकी सारी ट्रेनों में पांच प्रतिशत इस साल कटौती होगी। आप आरएसएस का संपादकीय भी पढ़ लीजिए और रेलवे का भी पढ़ लीजिए कि उसमें क्या लिखा है ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैं आपको पढ़ कर सुना दूं ...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: आप पढ़िए ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उसमें भी आपने पॉपुलर ट्रेन और साधारण ट्रेन का फच्चर फंसाया है ...(व्यवधान)... "इस वर्ष में भी मैं इन किरायों में और दो प्रतिशत कमी करने की घोषणा करता हूं। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी पॉपुलर ट्रेन एवं पीक पीरियड के दौरान यह कमी आधी रहेगी। इस प्रकार दो वर्षों में इनके किराये में लीन सीजन में 10 प्रतिशत और पीक सीजन में 5 प्रतिशत की कमी होगी, लेकिन पॉपुलर ट्रेन के यात्री किरायों में पूरे साल यह कमी 5 प्रतिशत रहेगी।"

श्री लालू प्रसाद: पढ़ लिया? यह एलएचबी कोच की सीटों में बढ़ोतरी हुई है और यह थ्री-टियर का है ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: ऐसा है लालू भाई ...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: यह प्रसंग है। बाकी सारी ट्रेनों में 5 प्रतिशत की कमी, एसी वगैरह सब छोड़कर, यह है उसका अभिप्राय।

श्रीमती सुषमा स्वराज: लालू भाई, मैंने इसका एक-एक शब्द पढ़ लिया और इसमें आपके जादूगरी के शब्द भी निकाल लिए।

श्री लालू प्रसाद: हां, हां, ठीक है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: वे सारी चीजें निकाल लीं, जो आप फच्चर फंसाते हैं। जब नई ट्रेन आप चलाते हैं, तो आप फच्चर फंसा देते हैं कि जब नई रेल लाइन बिछेगी, तब ट्रेन चलेगी और आपने तो ...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: हां तो फिर...आप यह correct कर लीजिए, थोड़ा जवाब देना भी जरूरी हो गया है। आठ के पहले के सारे पन्नों को पढ़कर देख लीजिए, जिस लाइन में 99 परसेंट काम पूरा हो गया है, महीने-दो महीने में पूरा होना है और सेफ्टी कमिश्नर की रिपोर्ट आनी है, अगले साल जो गाड़ी देनी है, तो एक साल जो गाड़ी की घोषणा होती है कि हम उसको टाइम से चलाएंगे, लेकिन next budget आने से पहले सब गाड़ियों को चलाना पड़ता है, यह वह है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: यह वह नहीं है लालू भाई!

श्री लालू प्रसाद: यह वह है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैं बताती हूं। अभी तो भाभी आपकी जान खाएंगी, क्योंकि आपने चकमा देने में उन्हें भी नहीं

छोड़ा। हाजीपुर-फुलवारिया जो नई ट्रेन आपके ससुराल जाती है, उसमें भी आपने फच्चर फंसा दिया कि ...(**व्यवधान**).

श्री लालू प्रसाद: अरे। बता दिया है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: जब नई लाइन बनेगी, तब ट्रेन चलाएंगे।

श्री लालू प्रसाद: ससुराल और फुलवरिया नहीं, यह भटनी जा रही है। जहां 99 प्रतिशत काम पूरा हो गया, उसमें मैंने स्वीकार किया कि जहां पूरा हो गया है, उसमें एक पैसेंजर गाड़ी हम अगले वित्तीय वर्ष में ...(**व्यवधान**)...

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: वह तो लालू जी नहीं चाहते कि भाभी मायके जाए, इसलिए नहीं चाहते।

श्रीमती सुषमा स्वराज: ऐसा है, लालू भाई, मैंने आपका पूरा बजट भाषण पढ़कर वे शब्द निकाल लिए, जिनके इर्द-गिर्द आपकी जादूगरी घूमती है। बताऊं क्या हैं?

श्री लालू प्रसाद: बताइए।

श्रीमती सुषमा स्वराज: Rationalisation, reclassification, peak season, lean season, popular train, unpopular train, युक्तिकरण, बाजार की स्थितियों के अनुरूप।

जब आपको कुछ भी करना होता है, आप इन शब्दों की आड़ लेकर चुपचाप बचकर निकल जाते हैं। अभी एक नया फच्चर बताती हूं, आपने एक नया फच्चर फंसाया। पूरे के पूरे कुली झूम रहे हैं। झूम रहे हैं न?

श्री लालू प्रसाद: हां।

श्रीमती सुषमा स्वराज: दुआएं दे रहे हैं, नाच रहे हैं, क्यों? क्योंकि आपने उनको कहा कि कुलियों को आप गैंगमैन या चतुर्थ श्रेणी में भर्ती कर देंगे। कहा है न आपने? पर उनको मालूम नही, वे बेचारे ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं। आपने उसमें भी एक फच्चर फंसा दिया, पढ़कर बताऊं आपको? लीजिए, बताती हूं...बताती हूं। यह देखिए ...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद: पढ़िये...फच्चर बताइए।

श्रीमती सुषमा स्वराज: फच्चर बताती हूं, वह फच्चर आपको बताती हूं। यह देखिए -''लाइसेंसधारी कुलियों की वर्षों पुरानी मांग के मद्देनजर'' अब फच्चर आ गया, ''समुचित स्क्रीनिंग कर लाइसेंसधारी कुलियों को वन टाइम बेसिस पर रेलवे में गैंगमैन एवं चतुर्थ वर्ग के अन्य पदों पर नौकरी दी जाएगी।'' यह जो समुचित स्क्रीनिंग है न, यह फच्चर है। ...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद: यह बेकार की बात है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: अब यह किसी को पता नहीं है। ...(**व्यवधान**)...और मैं आपको बताऊं, यह जो समुचित स्क्रीनिंग है न, इसमें आधे से ज्यादा कुली निकल जाएंगे। कहीं उनकी उम्र आड़े आएगी, कहीं उनकी पढ़ाई आड़े आएगी, कहीं उनकी फिजिकल फिटनेस आड़े आएगी, पचासियों चीजें हैं। ...(**व्यवधान**)...अब एक मिनट...न तो इस समुचित स्क्रीनिंग का कोई आधार आपने बताया। इससें तो अगर आप यह कह देते कि भाई, इसमें तीस बरस से ऊपर वाले ...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद: आप लोगों को अपच हो रहा है? आप लोगों को अपच हो रहा है, तो इसका तो कोई इलाज हमारे पास नहीं है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: नहीं, अपच कहां से?

श्री लालू प्रसाद: अपच हो रहा है। भाजपा के पेट में कब्ज हो गया है, पचा नहीं पा रहे हैं।

श्रीमती सुषमा स्वराज: लालू भाई, कुछ खिलाया होता, तो अपच होता। यह तो जादूगरी में दिखाया ही दिखाया है, खिलाया तो है ही नहीं!

श्री लालू प्रसाद: आगे देखते जाइए न, आगे।

श्रीमती सुषमा स्वराज: अपच तो तब होता लालू भाई, अगर कुछ खिलाया होता। यही तो मैं कह रही हूं कि जादू भर दिखाया है, खिलाया तो है ही नहीं। भोजन दिख रहा है। ...(व्यवधान)...

प्रो. राम देव भंडारी (बिहार): मैडम, देखने का नज़रिया है, जरा अच्छी नजर से देखिए, सब कुछ साफ दिखाई पड़ेगा।

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैंने देख दिया है। अब यह फच्चर है समुचित स्क्रीनिंग का, जो मैं आपको बता रही हूं और वे सारे कुली जो नाच रहे हैं, गा रहे हैं, झूम रहे हैं, जिस दिन इस समुचित स्क्रीनिंग में वे आधे से ज्यादा निकल जाएंगे, उस दिन वे आपको बद्दुआएं देंगे। ये फच्चर आप फंसाते हैं, आपकी आदत है।

श्री लालू प्रसाद: कोई फच्चर नहीं है। हम उन्हीं के आदमी हैं।

श्रीमती सुषमा स्वराज: अब मैं आपको चार सुझाव देती हूं, आप सुन लीजिए। बहन के सुझाव हैं, आपके काम आएंगे। पहला सुझाव यह है कि आपने विजन-2025 की बात की है। विजन-2025 में आपने कहा है कि मैंने दो ध्येय वाक्य रखने हैं- एक आराम और एक सुविधा। मैं आपको कहना चाहती हूं कि आराम और सुविधा तो एक दूसरे के पर्याय होते हैं। इन ध्येय वाक्यों को रखिए-सुविधा और सुरक्षा। आराम कब मिलता है? अगर आप सुविधा देंगे तो आदमी आरामदेह यात्रा करेगा। आराम तो मिल जाएगा। लेकिन व्यक्ति क्या चाहता है - आरामदेह यात्रा और सुरक्षित यात्रा। इसलिए आप ये ध्येय वाक्य बदलिए और उसकी जगह रखिए- सुविधा और सुरक्षा। ये दोनों ही रेल का ध्येय होना भी चाहिए। मेरा पहला सुझाव यह है। मुझे लगता है कि आप इसे मान लेंगे। मेरा दूसरा सुझाव विशेष गाड़ियों के संबंध में है। आप कुछ विशेष गाड़ियां चलाते हैं। आपने इसमें भी कहा है कि आप मदर-चाइल्ड हेल्थ एक्सप्रेस चलाने वाले हैं। यह 1857 की डेढ़ सौवीं वर्षगांठ का साल है। मेरा आपको सुझाव है कि आप उन क्रांतिकारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए एक गाड़ी 1857 एक्सप्रेस चलाइए जिसमें 1857 के क्रांतिकारियों के चित्र लगाइए। बच्चों को मालूम नहीं है। हम अपने राष्ट्रनायकों को भूल चुके हैं। वे क्रांतिकारी जिन्होंने 1857 में कुर्बानियां दी, जिनकी शहादत हुई, स्वतंत्रता संग्राम में जिन्होंने हिस्सा लिया, उनके चित्र लगाकर आप गाड़िया चलाएं। यह सुझाव भी आप मान जाएंगे। तीसरा, आपने एड्स पीड़ितों को एक राहत दी है।

श्री लालू प्रसाद: लड़कियों के बारे में जो किया ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उसका मैं स्वागत कर रही हूं।

श्री लालू प्रसाद: उसके बारे में आप कहां बोलीं?

श्रीमती सुषमा स्वराज: अभी आ रही हूं। मैं दोनों चीजों का स्वागत कर रही हूं। जो आपने छात्राओं को स्नातक तक की पढ़ाई के लिए छूट दी है, मैं उसका स्वागत करती हूं। जो आपने सीनियर सिटिजंस को छूट दी है, उसका भी मैं स्वागत करती हूं। लेकिन जो आपने आरपीएफ में महिला आरक्षण रखा है, वह कम है। सिपाहियों में आपने पांच परसेंट रखा है। वह पांच परसेंट कम है क्योंकि हर जगह यह कहा गया है कि हर पुलिस में 10 प्रतिशत का पुलिस बल महिलाओं का होना। इसलिए उसको बढ़ाकर कम से कम दस प्रतिशत कर दीजिए-यह सुझाव भी मैं देने जा रही थी। पहले दोनों बात मैं स्वागत करती हूं। मान्यवर, मैं एड्स पीड़ितों की बात कर रही थी। जो एड्स पीड़ित इलाज के लिए जाएंगे, उनको आपने छूत होने की बात की है। मैं आपको एक बात बता दूं, एड्स की सही और सच्ची जानकारी के बिना उन यात्रियों का शिक्षित होना। आपी पारिवेश में एड्स के बारे में सही जानकारी नहीं है। लोक समझते हैं कि यह छूत की बीमारी है। लोग समझते हैं कि एड्स पीड़ित से हाथ मिलाने से एड्स हो जाती है, साथ बैठने से एड्स हो जाती है, साथ खाना खाने से एड्स हो जाती है। मैंने स्वास्थ्य मंत्री के तौर पर इस जानकारी को देने का एक बड़ा अभियान चलाया था कि ये सारी बातें, ये सारी धारणाएं मिथ्या हैं, गलत हैं। मेरे समय में एक घटना घट गयी थी। केरल में दो बहन-भाई, जो एड्स पीड़ित थे - बेंजी और बेन, उनको स्कूल से निकाल दिया था क्योंकि जब उनके नाना-नानी ने आकर कहा कि उनको एड्स है तो बाकी तमाम जो मां-बाप थे, उन्होंने जाकर स्कूल में कहा कि हमारे बच्चे साथ नहीं पढ़ेंगे। मैं स्वयं केरल गयी थी। उन दोनों बच्चों को गोद में बिठाया था, फोटों खिंचाई थी, उन्हें प्यार किया था ताकि लोगों को यह पता लगे कि एड्स पीड़ित से हाथ मिलाने से, उन्हें गोद में बिठाने से एड्स नहीं होती। आप अपने डिब्बों में यह जानकारी लिखवाइए कि एड्स पीड़ित से हाथ मिलाने से एड्स नहीं होती है, साथ बैठने से एड्स नहीं होती, खाना खाने से एड्स

नहीं होती। इसी प्रकार टिकट के पीछे लिखवाइए, वरना ये एड्स पीड़ित जब अपनी टिकट टी.टी को दिखाएंगे तो लोग इन्हें गाड़ी से नीचे उतार देंगे। इस प्रकार आप इनका अहित करेंगे। इसलिए इस घोषणा को अगर आप वाकई पूरा करना चाहते हैं तो आप जानकारी वहां लिखवाइए। चौथा सुझाव मैं यह देना चाहती हूं कि ये जो आपके जादूगरी के शब्द हैं, जिनकी आड़ में आप बचकर निकल जाते हैं, यह जादूगरी समाप्त करिए और साफगोई से बात करना शुरू करिए ये मेरे सुझाव हैं। आपको शेरों में बात सुननी, कहनी बड़ी पसंद है। मैंने देखा कि आपका पूरा का पूरा, बजट भाषण कच्चे-पक्के दोहों से भरा हुआ है। किसी भी दोहे में न काव्यात्मकता है न लालित्य - कोरी तुकबंदी है। लेकिन मुझे यह लगा कि तुकबंदी में आपको बात ज्यादा अच्छी लगती है इसलिए मैं भी अपनी बात अपनी एक तुकबंदी से खत्म करूं तो ज्यादा अच्छा होगा। इसलिए मैंने एक तुकबंदी गढ़ ली। मैं उस तुकबंदी से बात अपनी खत्म करना चाहती हूं:

इतराने की कोई बात नहीं, इतना तो मैं दूं बता,
चतुराई मेरे भाई की, बताने की की है खता।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री राजीव शुक्ल (महाराष्ट्र): धन्यवाद उपसभाध्यक्ष महोदय। मैं आदरणीय सुषमा जी के ओजस्वी भाषण के बाद रेल बजट पर अपने विचार व्यक्त कर रहा हूं। अगर लालू जी को वह जादूगर कहती हैं, तो शायद मैं रेल बजट पढ़कर कह सकता हूं कि सुषमा जी को भाषण की जादूगरी आती है। कैसे तथ्यों को किस ढंग से पेश कर देना कि असली तथ्य छिप जायें और गलत तथ्य सामने आ जायें, इसके लिए मैं निश्चित रूप से उनकी प्रशंसा करना चाहूंगा। अगर ऐसी बहनें लालू जी को लगातार मिलती रहें और उनके बधाई संदेश मिलते रहें, तो मुझे लगता है कि उनकी राजनीति कैसी होगी, यह वह खुद समझ सकते हैं।

लोकतंत्र में आलोचना होती है, आलोचना करनी भी चाहिए और विपक्ष को खासतौर से जहां जितनी आलोचना सम्भव हो, वह करनी चाहिए। लेकिन यदि कहीं कोई प्रशंसा योग्य काम हुआ है, यदि कहीं कोई प्रशंसा योग्य बात है, तो उसकी तारीफ भी करनी चाहिए। इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता है कि आज भारतीय रेल पिछले साढ़े तीन साल में विश्व बैंक की गुलामी से बाहर आ गयी है। पहले जिस तरह से योजनाओं के लिए विश्व बैंक के हाथ-पैर जोड़ने पड़ते थे, अब वैसी स्थिति नहीं है। इस बात से कौन इन्कार कर सकता है कि जब रेलवे कर्जे में डूबा हुआ था, जब डा॰ मनमोहन सिंह जी की सरकार आयी और लालू जी रेल मंत्री बने हैं तब तकरीबन 2900 करोड़ का घाटा रेलवे को था और राकेश मोहन कमेटी ने कहा था कि रेलवे का डिस-इन्वेस्टमेंट कर दो। उस समय से अगर रेलवे को 25 हजार करोड़ का फायदा हुआ है, साढ़े तीन साल में यह चमत्कार नहीं तो और क्या है।

श्री लालू प्रसाद: 69 करोड़ का फायदा हुआ है, यह तो एक साल का है।

श्री राजीव शुक्ल: जो प्लान साइज है, वह 38 हजार करोड़ बढ़ गया है और सिर्फ 18 प्रतिशत पैसा फाइनेंस मिनिस्ट्री से लेना पड़ता है, वह बजटरी अलोकेशन में आता है, जो किसी जमाने में 60 प्रतिशत से ऊपर होता था। हर काम के लिए रेल मंत्री को वित्त मंत्रालय के चक्कर लगाने पड़ते थे और वह भी 18 प्रतिशत जहां सोशल सर्विसिज हैं, चाहे जम्मू-कश्मीर की रेलवे लाइन बननी है या नार्थ-ईस्ट के कॉरिडोर हों। उन्होंने सिर्फ 18 प्रतिशत की निर्भरता वित्त मंत्रालय पर कर दी और इतना लम्बा मुनाफा रेलवे को कर दिया है एक सरकारी विभाग होते हुए, सोशल ओबलीगेशन को पूरा करते हुए, तो ऐसा जादूगर तो हमें स्वीकार है, चाहे वह अम्बाला का हो या पटना का हो, ऐसा जादूगर इस देश को चाहिए। वह कहती हैं कि अम्बाला का कोई जादूगर उन्होंने देखा, जो फर्जी नोट बनाता था, तो यह पटना वाला जादूगर जो असली काम करता है, यह फर्जी काम करने वाला जादूगर नहीं है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, किराये कम होने की बात विवादों के घेरे में लायी जा रही है, उसे विवादास्पद बताया जा रहा है कि यह सिर्फ शब्दों की बाजीगरी है और एक्च्युअली किराये कम नहीं हुए हैं। शब्दावली कोई भी लगायी गयी है, चाहे पॉपुलर ट्रेन्स के नाम पर हो, चाहे पीक सीजन के नाम पर हो, लेकिन अगर हम मोटी बात पकड़ें, तो पांच प्रतिशत की कमी तो है। चार साल से रेलवे के किराये बढ़ाये नहीं जा रहे हैं और कमी की जाती है, उसके बाद रेलवे का प्लान साइज बढ़ता है, खर्च बढ़ाया जाता है, नई योजनाएं शुरू हो रही हैं, डिब्बे बढ़ रहे हैं, इन सबके बावजूद अगर मुनाफा होता है, किराये नहीं बढ़ते हैं, तो उसकी सराहना होनी चाहिए या आलोचना होनी चाहिए, यह बात मैं जानना चाह रहा हूं। जब

इन्होंने रेलवे मंत्रालय का काम संभाला था, तो चारों तरफ एक माहौल था कि अब रेल भवन भी बिहार भवन बन जाएगा, अब तो साहब, रेलवे का बेड़ा गर्क हो जाएगा, लेकिन आज वह बात कोई नहीं कहता। आज अगर कोई भारी आलोचक हैं तो वे चुप हैं और जो निष्पक्ष हैं वे खुलकर तारीफ कर रहे हैं। इन्होंने कहा कि हम न तो रेलवे का डिस-इंवेस्टमेंट करेंगे और न ही हम डाउन साइज करेंगे, भर्ती भी जारी रहेगी। यह था कि भर्ती में कटौती कर दीजिए और न हम इसका प्राइवेटाइजेशन होने देंगे। अब मैं यह जरूर बताना चाहूंगा कि इन्होंने क्या जादूगरी की है, जिस जादूगरी ने रेलवे के भाग्य को बदल दिया है। इन्होंने सिम्पल फार्मूला लिया कि जो सोशल ऑब्लिगेशन था, उसका और कॉमर्शियलाइजेशन का एक तरह से समागम करा दिया, साथ ही किराया बढ़ाने की बजाए लोड बढ़ा दिया। इस प्रकार से इन्होंने साढ़े तीन हजार कोच बढ़ाए, जिसमें एक कोच से एक करोड़ रुपए का फायदा होता है। मान्यवर, पिछली सरकार के लोगों ने जो विदेश से छः हजार हार्स पावर का इंजन खरीदा था, उससे वे केवल 14 से 18 डिब्बे तक चला रहे थे, जबकि वह 24 से 26 डिब्बे खींच सकता था। इन्होंने उसमें कोच बढ़ाने का काम किया है, क्योंकि इन्होंने गांव का एक सिद्धांत पकड़ा कि अगर गाय नहीं दुहोगे, तो वह बीमार पड़ जाएगी। गाय की जो पूरी क्षमता है, अगर आप उसका दोहन करेंगे, तो आपको फायदा होगा। इसलिए उन्होंने कोच 14 से 26 तक बढ़ाने की कोशिश की, तो उससे लोड बढ़ा। मान्यवर, यदि मैं आपको आंकड़े दूं तो आप पाएंगे कि राजधानी 797 यात्रियों को लेकर चलती है, उसी लाइन पर इन्होंने 1929 पेसेंजर्स का गरीब रथ डाला। राजधानी के एक यात्री पर, एक किलोमीटर पर जो 56 पैसे खर्च होते थे, अब वह घटकर गरीब रथ पर, सिर्फ 32 पैसे आ गया है और 40 से 45 प्रतिशत किराए में कमी आ गई। जो व्यक्ति दो हजार रुपये खर्च करके, राजधानी में टिकट लेता था या इसी तरह की किसी दूसरी ट्रेन में टिकट लेता था, अब वही साढ़े छः सौ रुपए का टिकट हो गया और वही उसकी एयर कंडिशंड यात्रा हो गई। एसी 2 टायर में 64 की 81 सीटें कर दीं, एसी 3 टायर में 72 की जगह 104 सीटें कर के, यह अप-ग्रेडेशन किया है। जब अप-ग्रेडेशन किया तो उसकी वॉल्यूम बढ़ा दी। यह एक सिम्पल सी बात है। इसको कोई भी रेल मंत्री कर सकता है। हमें लगता है कि दिग्विजय सिंह जी हमारी तरफ कातिल निगाहों से देख रहे हैं। उन्हें मौका नहीं मिला। अगर उनको रेलवे का कैबिनेट मिनिस्टर बनाते, तो वे शायद कर देते, लेकिन उन्हें वह अवसर नहीं मिला। पॉपुलर ट्रेन की बात करते हैं, तो कुल साढ़े चार सौ पॉपुलर ट्रेन्स है। ऐसी नहीं कि दो, चार और पांच पॉपुलर ट्रेन्स के किराए में कमी की गई है और जो इनमें एक हजार करोड़ का घाटा था, वह break-even level पर आ गया है। पिछले पचास सालों से जो रेलवे सिद्धांत चला आ रहा था, एफोर्डेबिल्टि, जो अफोर्ड कर सके, उस पर ज्यादा किराया लादो और जो एफोर्ड न कर सके सिर्फ उसी की बात करो। इन्होंने समाज के सभी वर्गों के बारे में बात की है। एसी फर्स्ट क्लास का किराया भी कम किया है, एसी टू टायर का किराया कम किया है, थ्री टायर का किराया कम किया और जनरल डिब्बे का किराया भी कम किया है अर्थात् सब यात्री डिब्बों का किराया कम किया है। इससे यात्री रेलवे के प्रति आकृष्ट हुए हैं। पहले इसका जहाज से कम्पटिशन होने लगा था। अगर किसी को बंगलौर जाना हो, तो उसे दो हजार का टिकट एयर डेक्कन या किसी दूसरी एयरलाइंस से 2700 रुपये का मिल जाता था और रेलवे में कोई नहीं जाता था, क्योंकि कौन इतने घंटे बर्बाद करें इन्होंने इस किराए को कम करके, आज एयरलाइन्स को कड़ी चुनौती दे दी है। अब कोई एयरलाइंस अपना विज्ञापन नहीं देती कि हमारा किराया ट्रेन से कम है। जो इन्होंने व्यापारिक बुद्धि लगाकर काम किए हैं....। उनकी जितनी सराहना की जाए, कम है। प्राइसिंग की जो स्ट्राटेजी बनाई, 31 परसेंट एं॰सी॰ फर्स्ट क्लास में कम किया, एं॰सी॰ टू का 18 प्रतिशत और एं॰सी॰ थ्री का 40 परसेंट किराया कम किया है। मान्यवर, पेट्रोल, डीजल पर पांच प्रतिशत की कटौती की है। अब इसका लाभ कंज्यूर को मिलना चाहिए। पेट्रोल और डीजल की कीमतों में तेल कंपनियों को उसी अनुपात में कमी करनी चाहिए और राज्य सरकारों को भी करनी चाहिए, क्योंकि उसमें पांच प्रतिशत की कमी की है इन्होंने 1970 के कोच बदल दिए रेलवे ट्रैक तो चौड़ा था, लेकिन उनका साइज वही था। उनकी ऊंचाई नहीं थी, जबकि नौ मीटर तक इलेक्ट्रिसिटी की वायर होती है। आप कोच की लंबाई बढ़ा सकते है, लेकिन पुराने कोच चल रहे थे। फ्रेट को उन्होंने ऐसे बदला कि माल भाड़े से आमदनी उस दृष्टि से की। इन्होंने उन कोचेस को बदला और चालीस से अठावन डिब्बे की गाड़ी कर दी। उसकी क्षमता इतनी बढ़ा दी कि उसमें बहत्तर टन माल आना शुरू हो गया।

श्री लालू प्रसादः चोरी भी हो रही थी।

श्री राजीव शुक्लः अच्छा, चोरी भी चल रही थी। कैपेसिटी बढ़ाने के साथ -300 मीटर के प्लेटफार्म होते थे और 680 मीटर की गाड़ी होती थी, दो बार में लोडिंग होती थी, दो-दो दिन तक लोडिंग चलती रहती थी, सिर्फ ऑफिस टाइम में

लोडिंग होती थी, बाकी टाइम घर में जाकर बैठते थे, इन्होंने चौबीस घंटे की लोडिंग कराई। सबसे पहले तो इनके पास जो 350 करोड़ का डिसक्रेशनरी फंड था, उससे प्लेटफार्म की लंबाई बढ़ाकर 680 मीटर की ताकि एक बार में गाड़ी की लोडिंग हो जाए। टर्न अराउंड बढ़ा दिया और हर टर्न अराउंड में इन्हें 65 करोड़ का फायदा होता गया। माल भाड़े से आमदनी बढ़ी और यात्री किराये से इस तरह से आमदनी बढ़ी कि बिना किराया बढ़ाए रेलवे की आमदनी बढ़ती चली गई। इन्होंने एक संकल्प और लिया कि टिकट खरीदने के लिए जो लाइन लगती है, हम उसे भी खत्म कर देंगे। आज ई-टिकटिंग का काम शुरू हुआ है। अभी तक दो लाख पैसेंजर पर डे ई-टिकिट्स की सेवाएं ले रहे हैं। इसको चार लाख तक ले जाने की योजना है। 9000 टिकट वेंडर अपोईंट कर रहे हैं। आपको जगह-जगह टिकट मिल जाएगा और 9000 लोगों को नौकरी भी मिलेगी। 1500 कंप्यूटर सेंटर खोल रहे हैं। स्मार्ट कार्ड योजना अलग है। लोकल ट्रेन्स के लिए, मुंबई जैसी जगहों पर, अरबन एरियाज के लिए, आज उसे रेलवे के टिकट के रूप में यूज कर सकते हैं। इन्होंने 139 का नया कॉल सेंटर चालू किया है उसमें यह नहीं आता कि इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं या आपको इसकी सूचना या जानकारी नहीं मिलेगी। 139 लगाइए आपको उस पर तुरंत सारी जानकारी मिलेगी लेकिन लालू जी, अभी उस पर दो घंटे देर से जानकारी मिलती है, बासी सूचना मिलती है। आप ट्रेन पर जी॰पी॰एस॰ सिस्टम लगा रहे हैं, मुझे लगता है कि यह लग जाने के बाद यह सूचना आने लगेगी कि ट्रेन की मौजूदा स्थिति क्या है। उस समय आपके लिए और आसानी हो जाएगी कि यह कैसे काम करता है। मान्यवर, इसमें यह बहुत महत्वपूर्ण योजना "ग्रीन टॉयलेट" की है। मुझे लगता है कि यह बहुत सराहनीय काम है। जिस प्लेटफार्म पर जाइए, रेलवे ट्रेक पर इतनी गंदगी रहती है कि खड़ा रहना मुश्किल है। यह ग्रीन टॉयलेट की जो स्कीम है– इसके लिए कानपुर आई॰आई॰टी॰ के लोगों को भी धन्यवाद देंगे कि उन्होंने इसे डेवलप किया है, ग्रीन टॉयलेट्स के जरिए प्लेटफॉर्म और रेलवे ट्रेक की जो गंदगी है, उसका पूरी तरह से समाधान होगा।

श्री लालू प्रसाद: अगले तीन साल में पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी।

श्री राजीव शुक्ल: मंत्री जी कह रहे हैं कि अगले तीन साल में पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी। रेलवे ट्रेक पर जो मल-मूत्र गिरता था, वह समाप्त हो जाएगा। यह न केवल समाज की सेवा होगी, बल्कि यह देश के लिए भी एक बहुत महत्वपूर्ण चीज है। जो वेस्ट होगा, डिस्पोजल होगा उसका किस तकनीक से क्या फायदा ले सकते हैं, यह भी देखने की बात है। मैं उनको इसका सुझाव देना चाहता हूं। महिलाओं, स्टूडेंट्स और वृद्धों की रियायत का जिक्र स्वयं सुषमा जी ने किया है मुझे लगता है कि यह आपने एक बहुत अच्छी चीज की है। इसकी जितनी सराहना की जाए, कम है। कमर्शियल एक्सप्लाएटेशन की एक स्कीम चल रही है कि लाखों एकड़ में रेलवे की जमीन पड़ी हुई है। उसका कोई यूज नहीं है। इस पर कब्जे हो रहे हैं, तरह-तरह के लोग उस पर जम जाते हैं, बहुत मिसयूज हो रहा है। रेलवे के करीब 14 लाख में से सिर्फ 6 लाख एम्प्लाएज को क्वार्टर मिले हुए हैं। बाकी employees के पास क्वार्टर नहीं हैं और हैं भी, तो बहुत पुराने छः लाख लोगों के घर है। इनके नवीकरण की एक योजना है कि उनको सुधार कर नया बनाया जाए, किस तरह से ज्यादा-से-ज्यादा रेलवे कर्मचारियों को क्वार्टर मिलें उसमें मुम्बई में जो slum rehabilitation योजना है, लगभग उसी मॉडल को लेते हुए, ये उसका commercialisation करेंगे, जिसमें इतनी जमीन पर मल्टी स्टोरी मकान बना कर रेलवे employees को क्वार्टर बना कर दे दें और बाकी जमीन commercial purpose से देकर रेलवे अपनी आमदनी को बढ़ा सकती है, जिससे रेलवे अन्य कल्याणकारी योजनाएं चला सकती है, वरना वह जमीन कब्जा हो जाएगी, किसी दूसरे के हाथ में निकल जाएगी। उससे रेलवे को नुकसान हो सकता है। यहां तक कि मुम्बई की जो MUTP योजना है, जिसमें अब रेलवे लाइन चार से पांच छः तक हो जाएगी, वह भी इसी commercial योजना के तहत ली जाएगी और इससे मुम्बई के लोगों को काफी बड़ी राहत मिलेगी। मुम्बई में ऊपर से भी मेट्रो रेल बनाने की योजना है। ऊपर से एक ट्रेन चलेगी, जो मुम्बईवासियों को एक नए किस्म की राहत प्रदान करेगी।

मान्यवर, इनकी जिस योजना से यूपीए सरकार का रेल मंत्रालय चल रहा है, अगले पांच साल में 2.5 लाख करोड़ रुपए रेलवे पर लगाने की तैयारी है। 1947 से आज तक 2.5 लाख करोड़ लगा है और यह 2.5 लाख करोड़ सिर्फ इतनी अवधि में लगाने की योजना है। वह यह जताती है कि किस तरह से रेलवे की health, रेलवे की सेहत और रेलवे के स्वास्थ्य को दुरुस्त किया गया है।

इसी के साथ, मै अपनी कुछ शिकायतें और बातें भी रेल मंत्री जी के सामने रखूंगा। हमारे मित्र और पूर्व रेल मंत्री माधव राव सिंधिया जी ने शताब्दी ट्रेन शुरू की थी। उस ट्रेन से बहुत बड़ा लाभ ऐसे लोगों का मिला था, जो हवाई जहाज से यात्रा नहीं कर सकते थे और इसमें 400, 500, 600 किलोमीटर तक के शहर होते थे। यह बहुत fast ट्रेन थी। शुरू

होती थी और उसी destination पर जाकर रुकती थी, उसी गंतव्य पर रुकती थी। धीरे-धीरे हम सारे मित्रों के राजनीतिक दबाव और अन्य लोगों के राजनीतिक दबाव में आज शताब्दी जगह-जगह रुकती जा रही है। जिसकी जो constituency होती है, वह हर रेल मंत्री से अपनी जान-पहचान, अपने दबाव का इस्तेमाल करके शताब्दी ट्रेन को रुकवा लेता है। जो शताब्दी ट्रेन पहले ढ़ाई घंटे में जिस गंतव्य पर पहुंचती थी, आज उसे साढ़े तीन-चार घंटे लगने लगे हैं और उस शताब्दी ट्रेन का अर्थ समाप्त होता चला जा रहा है मेरा मंत्रीजी से आग्रह है कि वे इस पर पुनर्विचार करें। ऐसे सारे प्रस्तावों पर पुनर्विचार करके जो बहुत जरूरी है, सिर्फ उसे रखें और बाकी रद्द कर दें। कई जगह तो मैंने देखा कि सिर्फ दो यात्री चढ़ते हैं और सिर्फ दो यात्री उतरते हैं। इसके बावजूद वहां शताब्दी ट्रेन किसी-न-किसी प्रभावशाली व्यक्ति की वजह से रुक गई। शताब्दी ट्रेन के schedule पर फिर से निगाह डालें और इसको review करें। हम सदन में यह मांग करते हैं कि वे उन स्टेशंस पर उसका रुकना बन्द करें।

दूसरा, उन्होंने प्लेटफॉर्म पर इस तरह से तमाम फास्ट फूड कॉर्नर और रेस्तरां देने का निर्णय किया है, कई जगह आ भी रहे हैं, लेकिन अभी भी प्लेटफॉर्म पर जो वैंडर्स का खाना मिलता है, उसकी quality बहुत खराब है वह भले ही अपना पैसा बढ़ा ले, लेकिन ट्रेन रुकती है, लोग डिब्बे से हाथ बढ़ा कर उससे खाना ले लेते है, पूरी आलू, चाय, लेकिन जब ट्रेन आगे चली जाती है, उसको खाते-पीते हैं, तो उसकी quality इतनी खराब है कि बाद में आदमी को पता चलता है, लेकिन यात्री आगे निकल जाता है इन वैंडर्स को सुधरवाने की कोशिश कीजिए, क्योंकि खाने की quality बहुत खराब है।

5-00 P.M.

तीसरी बात यह है, जैसा सुषमा जी ने भी सुरक्षा की बात रखी है, मैं भी उस बात का समर्थन करता हूं। रेलवे के अन्दर सुरक्षा के प्रबंध और कड़े होने चाहिए। अभी कानपुर के एक बहुत मशहूर डाक्टर का लोगों ने एसी फर्स्ट क्लास में मर्डर कर दिया, उनके सारे पैसे ले लिए। कई जगह बिस्किट खिलाने वाले गिरोह चलते हैं। वे आपसे बात करने लगते हैं। वे टाई, पैंट, सूट में चलते हैं। आप समझते हैं कि बहुत बढ़िया साथ का आदमी है। वह बिस्किट का पैकेट निकालता है, एक खुद खाता है और कहता है कि भाई साहब, आप भी लीजिए। आपसे दोस्ती हो जाती है, आप खा लेते हैं, आप बेहोश हो जाते हैं और वह आपका सामान लेकर चला जाता है दूसरा या चौथा बिस्किट जहरीला होता है। इसमें नींद की गोलियां होती हैं। ठीक वाला वह खाता जाता है और नशे वाला बिस्किट आप। इस तरह के गिरोहपर काबू पाने के लिए रेलवे के अंदर सुरक्षा के इन्तजाम और मजबूत करने चाहिए।

मेरे ख्याल से जनरल क्लास के डिब्बे और बढ़ाने चाहिए, ऐसी हमारी उनसे मांग है। सब-अर्बन स्टेशंस पर ट्रेन रुकने की व्यवस्था होनी चाहिए। अभी जितनी ट्रेनें नई दिल्ली या पुरानी दिल्ली पर terminate होती हैं, अगर यही शताब्दी ट्रेन निजामुद्दीन पर रुक जाए, मैं उदाहरण के लिए बता रहा हूं, तो साउथ दिल्ली का दिल्ली-आगरा ट्रैफिक, वहीं उतर जाएगा। इसलिए हर शहर में, जहां सब-अर्बन स्टेशन हैं, अगर वहां एक मिनट के लिए भी गाड़ी रोकें, जो सारा pressure मेन स्टेशन पर नहीं आता है। चाहे कोलकाता हो, चाहे मुम्बई हो, चाहे दिल्ली हो, चाहे मद्रास हो, इसे सारे शहरों में करना चाहिए। बड़े शहर के अन्दर अगर थोड़ी देर के लिए ट्रेन एक सब-अर्बन स्टेशन पर रुक जाए, तो उस प्लेटफॉर्म पर, उस स्टेशन पर उसका आधा लोड कम जाएगा। और लालू जी का, गरीब रथों का एक ऐसा मॉडल है, जिसकी जितनी तारीफ की जाए, कम है। इस मॉडल को और बढ़ाना चाहिए एवं इसमें जितनी और ट्रेनें शुरू हों, बेहतर होगा। इससे आम आदमी को बहुत राहत मिलेगी, क्योंकि इसका किराया सस्ता है, वातानुकूलित सुविधा है और यह ट्रेन बहुत ही लोकप्रिय हो रही है, इसलिए गरीब रथों की संख्या और बढ़नी चाहिए।

मान्यवर, अहमदनगर बीड पारली कॉरिडोर का काम बहुत धीमा है। मेरा रेल मंत्री जी से अनुरोध है कि अगर अहमदनगर बीड पारली कॉरिडोर, महाराष्ट्र को नोटिस में लेकर इसे करें तो बहुत ही अच्छा रहेगा।

एनडीए सरकार के जमाने में लोगों ने यह मांग की थी कि अगर सभी मंत्रालयों के तीन लोग रिटायर होते हैं, तो केवल एक पोस्ट भरी जाएं सुषमा जी आपत्ति कर रही थीं, लेकिन नीतीश कुमार जी के जमाने में रेलवे में लाखों वेकेंसीज़ खाली रखी गईं, लेकिन लालू जी ने आते ही इसका विरोध किया और सारी बहाली शुरू की। एक ओर जहां वेकेंसीज़ भरी गईं, लोगों को ज्यादा नौकरियां मिलीं, उसके साथ-साथ रेल किराए भी

सस्ते हुए। आज वही रेलवे? जो विश्व बैंक के आगे घुटने टेकती थी, जो बात-बात के लिए पैसा मांगती हुई घूमती थी, आज अपने आप में उस गुलामी से आजाद हो गई। आज रेलवे को 25,000 करोड़ रुपये से भी ज्यादा 69,000 करोड़ रुपये की आमदनी होने लगी। उसका प्रॉफिट इतना बढ़ गया है, लेकिन किराए नहीं बढ़ रहे हैं। इसके बाद भी अगर आलोचना होती है और विपक्ष आलोचना करता है, तो मुझे समझ में नहीं आता कि हमें क्या कहना चाहिए?

मान्यवर, मैं यह विपक्ष से पूछना चाहता हूं और इस बात का निर्णय सदन ही करे कि इन सबके बावजूद भी आलोचना की क्या गुंजाइश रह जाती है? एक बार फिर से मैं इस रेल बजट का समर्थन करते हुए, लालू जी को धन्यवाद देते हुए, डा॰ मनमोहन सिंह जी को धन्यवाद देते हुए, बैठना चाहता हूं।

श्री वीरेन्द्र भाटिया (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष जी, इस वर्ष का .... (**व्यवधान**) लालू जी, दो मिनट आप बैठ जाइए, मेरी भी सुन लीजिए, क्योंकि बहुत दिनों बाद अवसर मिला है।

मैंने रेल बजट का अध्ययन किया। अभी तक लोग लालू जी को मैनेजमेंट गुरू के रूप में जानते थे, लेकिन मुझे एक अच्छी बात लगी कि आपने स्वयं स्वीकार किया कि आप सपने भी बेचते हैं और जादूगर भी हैं। मैं आपको सपने बेचने वाला नहीं, सपनों का सौदागर कहना चाहता हूं। मैं आपको जादूगर भी कहना चाहता हूं, लेकिन पहले एक शेर मैं सुना दूं और यह बता दूं कि सपनों और हकीकत में बड़ा फर्क होता है? लालू जी। सपने बेचना बहुत आसान होता है, लेकिन सपने साकार करना उतना ही मुश्किल होता हैं अभी हमारे बड़े भाई और कवि उदय प्रताप सिंह जी ने एक शेर सुनाया और कहा कि मैं आपको उसे सुना दूं, इसलिए मैं उस शेर से ही अपनी बात प्रारम्भ करता हूं:

कल्पना कभी साकार नहीं होती है।
याचना कभी अधिकार नहीं होती है।।
कटु सत्य सिंधु के भीषण तूफानों में।
सपनों की नौका पार नहीं होती है।

जब मैंने लखनऊ विश्वविद्यालय में परीक्षा पास करने के बाद वकालत प्रारम्भ करने की सोची तो फौजीदारी के एक बहुत प्रसिद्ध वकील थे। मैं उनके पास गया। लखनऊ विश्वविद्यालय यूनियन का मैं मंत्री रहा। वैसे वह अपने पास कोई जूनियर नहीं रखते थे, उनका नाम था स्वर्गीय बाबू जगत भाई श्रीवास्तव। मैंने उनसे पूछा कि क्या मुझे आप अपना शिष्य बनाएंगे, तो उन्होंने बहुत देर सोचा और फिर उसके बाद बोले कि तुम को शिष्य जरूर बनाऊंगा, क्योंकि तुम शब्दों के सौदागर हो। शब्दों के जादूगर हो। उस समय तो मैं कुछ नहीं बोला, लेकिन फिर उसके बाद उनसे पूछा कि इसका क्या तात्पर्य है। उन्होंने कहा, देखो, अच्छा वकील होने के लिए शब्दों का वाग्जाल बुनना बहुत आवश्यक है। मैं तुमको गुर बता रहा हूं कि जब जज के सामने बहस करना तो ऐसी कहानी गढ़ना कि उसको लगे कि जो कुछ तुम कह रहे हो, वह सच है। लेकिन एक बात का ध्यान जरूर रखना कि अगर तुमने बहुत सोचने का मौका दे दिया, तो तुम्हारे सारे तर्कों की धज्जियाँ उड़ाने के लिए दूसरा पक्ष होगा और हकीकत कुछ और भी हो सकती है।

तो लालू जी, सचमुच आप शब्दों के बाजीगर हैं। आपने स्वयं स्वीकार भी किया है कि आप जादूगर हैं। लेकिन यह सही है...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद: कहाँ बोला है? ...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया: आपने अपने ही उसमें कहा कि "मैं जादूगर हूँ" ...(**व्यवधान**)...

जादू-टोना नहीं, "मैं जादूगर हूँ। ...(**व्यवधान**)... अभी मैं आपका पढ़ दूँ? अभी मैं फिर से आपको रिमाइंड कर दूँ। आपने ही स्वीकार किया। ...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद: जादू-टोना बहुत देखा, अब इंद्रजाल देखिए ...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया: हाँ, "जादू और टोना हमने दिखाया था पिछले साल, इस बार पूरा इंद्रजाल देख लीजिए।" जादू-टोना और इंद्रजाल थोड़ी देर के लिए बहुत अच्छा लगता है, लेकिन जब मस्तिष्क का इस्तेमाल कीजिए तो लगता है कि यह क्या हुआ, यह तो कुछ हकीकत है ही नहीं। वैसे ही आपका बजट है शब्दों को पढ़िए, अखबारों को पढ़िए, तो लगता है कि ऐसा बजट हो ही नहीं सकता। जनता में लोकप्रिय बजट आपने दिया है, लेकिन जब हकीकत में जाइए, जब अध्ययन कीजिए, तो मालूम होता है कि हकीकत क्या है। जो कुछ कहा है, वह कब पूर्ण होगा? आपने कहा कि आप सपने बेचते हैं। सचमुच आप सपनों के सौदागर हैं। जब मैं विश्वविद्यालय-जीवन में था- अभी हेमा जी नहीं हैं-- तो एक पिक्चर आई थी, जिसमें हेमा मालिनी जी ने सबसे पहली बार एक्टिंग की थी, "सपनों का सौदागर"। वहीं से मैंने पिक्चर देखना प्रारम्भ किया।

मैने दस वर्ष पूर्व एक कहानी पढ़ी थी । वह मैग्जिन मुझे याद नहीं है। शायद कादम्बिनी या सरिता में पढ़ी थी। वह बिहार के एक गाँव की कहानी थी। एक व्यक्ति के पितामह स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे। वह एक बहुत सुदूर गाँव के रहने वाले थे। जब आजादी मिली तो उनको लगा कि मैंने स्वतंत्रता संग्राम लड़ा है — उस गाँव में न रोशनी थी, न सड़क थी और न स्कूल था। उनके मन में आशा की किरण जागी। वह सपना देखने लगे कि एक दिन आएगा। अब तो कभी-न-कभी रोशनी, सड़क और स्कूल, सब कुछ इस छोटे-से गाँव को मिलेगा। फिर उसके बाद एक चुनाव आया, दूसरा चुनाव आया, तीसरा चुनाव आया और "वह आएगी-वह आएगी" कहते हुए उसके पितामह का देहान्त हो गया। उसके बाद उस प्रदेश में एक मुख्य मंत्री आया-नाम तो उसने नहीं बताया-जो अपने को जनता का मुख्य मंत्री कहता था, जो यह कहता था कि गरीब लोगों की आशा हूँ, जो यह कहता था कि मैं तो चरवाहा हूँ, चरा भी सकता हूँ जो कहता था कि मैं झोंपड़ी में रहता हूँ, मुख्य मंत्री होने के बाद भी, जो यह कहता था कि मैं आज भी गायों और भैंस के बीच में रहता हूँ और मैं जनता का मुख्य मंत्री हूँ। उस पोते की फिर आशा जागी, जागृत हुई उसने कहा कि अब तो हमारा मुख्य मंत्री आया है, हमारे बीच का मुख्य मंत्री आया है और हमारे इस छोटे-से गाँव में भी फिर से खुशहाली आएगी ...(**व्यवधान**)...

SHRI JANARDHANA POOJARY (Karnataka): Sir, whether it is related.

श्री वीरेन्द्र भाटिया: क्या आपको सुनने में भी एतराज है? उस कहानी में अगर होता तो मैं जरूर बता देता। ...(**व्यवधान**)...

SHRI JANARDHANA POOJARY: We have been hearing this for the last ten minutes. Sir, we are also waiting to speak on the Rail Budget.

श्री वीरेन्द्र भाटिया: मैं बजट के बारे में ही बोल रहा हूँ। आपने कहा है । आपको सुनने में कोई एतराज है?...(**व्यवधान**)... आलोचना सुनना भी सीख लीजिए। ...(**व्यवधान**)... अगर आपकी समझ में नही आ रहा है, ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: सर, ...(**व्यवधान**)... यह अपनी बाजीगरी शुरू कर दिए हैं। ...(**व्यवधान**)...अपनी बाजीगरी कर रहे हैं आप। ...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया: मैं उसी पर आ रहा हूँ। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): भाटिया जी, ...(**व्यवधान**)...

SHRI VIRENDRA BHATIA: Sir, I know my time. I will conclude in time. Rest assure.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Then, I have no problem.

श्री वीरेन्द्र भाटिया:अभी तो शुरुआत की है, तब परेशानी हो रही है। अभी आगे बोलूँगा तो फिर बड़ी तकलीफ हो जाएगी।

वहाँ मुख्य मंत्री आये और कहने लग गए। फिर आशा की किरण जागी। एक चुनाव आया। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में मैं नहीं कर सका, अगले चुनाव में जरूर माँग पूरी करुंगा। और दूसरा चुनाव भी आ गया, सत्ता परिवर्तन हो

गया, मुख्य मंत्री चला गया, लेकिन वह वैसे-के-वैसे ठगे रह गए। उनके सपने टूट गए। तो लालू जी, कहीं वही पुनरावृत्ति यहां भी फिर से न हो जाए। सपने दिखाना बहुत आसान है, लेकिन सपनों को हकीकत में बदलने का जब अवसर आता है तब बड़ी मुश्किलें और दुशवारियां होती हैं और आप तो 4 वर्ष से सपने दिखा रहे हैं। ऐसा न हो कि जो बिहार में हुआ था, वही यहां भी हो जाए। चुनाव के एक वर्ष बाद आप न हों और सब के सपने, सपने रह जाएं।

प्रो॰ राम देव भंडारी: बिहार में क्या हुआ?

श्री वीरेन्द्र भाटिया: बिहार में सत्ता परिवर्तन हुआ और आप वहां से यहां चले आए।

प्रो॰ राम देव भंडारी: 15 वर्ष सत्ता में रहे । ...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया: यही तो मैं कह रहा हूं कि आप इतने वर्ष रहे, लेकिन परिवर्तन न कर सके। यही तो मै कह रहा हूं। ...(**व्यवधान**)... सुन लीजिए, आलोचना भी सुन लीजिए। ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: कांग्रेस से समाजवादी पार्टी में आकर आपने क्या परिवर्तन किया?

श्री वीरेन्द्र भाटिया: परिवर्तन तो अब होगा। अब आप न रहेंगे, अब हम ही रहेंगे यहां पर। परिवर्तन तो होने ही वाला है। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): बोलिए, बोलिए।

श्री वीरेन्द्र भाटिया: मैं सचमुच धन्यवाद देता हूं, लालू जी को कि आपने कई अच्छे वायदे भी किए हैं और बहुत लोक-लुभावन वायदे किए हैं, लेकिन मैं फिर वही बात कह रहा हूं कि उन्हें सिर्फ सपनों तक सीमित मत रखिए। मैं आपको इसलिए कह रहा हूं कि उनको हकीकत में लाने की भी कोशिश कीजिए। और एक बात कहूंगा कि बजट देखकर ऐसा लगता है कि आप सारे देश के रेल मंत्री नहीं हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री लालू प्रसाद: कभी-कभी सपने में परी से भी भेंट होती है।

श्री वीरेन्द्र भाटिया: वह तो आप के लिए होगा, हमें तो दूसरे लोगों से भेंट होती है। उसे देखकर ऐसा लगता है कि आप पूरे देश के नहीं केवल बिहार के रेल मंत्री हैं। आप जरा अपना बजट देख लीजिए। मैं आपसे कहना चाहूंगा, आपने 53 नई गाड़ियों में से 19 गाड़ियां बिहार को दी हैं।

श्री लालू प्रसाद: आप यू॰पी॰ का भी पढ़ लीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया: आप मुझे बोलने भी नहीं देंगे ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (Prof. P.J. KURIEN): **Mr. Rajeev Shukla, you take your seat.** ...*(Interruptions)*... Mr. Shukla, Mr. Pany, please take your ...*(Interruptions)*... **No, no; do not** disturb. ...*(Interruptions)*...Mr. Bhatia, **do not reply to them. भाटिया जी, आप चेयर को address** करो। Don't look at them Don't reply आपका **टाइम सिर्फ 30 मिनट है। और, डिटेल्स** बाद में। **सीरियस,** बोलिए।

श्री वीरेन्द्र भाटिया: सर, एक नया वैगन कंस्ट्रक्शन यूनिट हमारे में लगाया जाएगा, भोजनालय और उपकरणों की वर्कशॉप वहां लगाई जाएगी, मकोमा और मुजफ्फरपुर की वैगन वैगन फैक्टरी का अधिग्रहण किया गया है, नबीनगर-औरंगाबाद जिले में एक हजार एम॰डब्ल्यू॰ क्षमता पावर प्लांट लगाया जा रहा है। हमें इससे कोई एतराज नहीं है। कि आपका घर चमचमाए, मगर इस गरीब के घर में भी दिया जलाएं, हमारी आरजू यही है । आपने हमारे उत्तर प्रदेश की तरफ भी नजरे इनायत कर ली होती। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): भाटिया जी, चैयर को एड्रेस करो Don't address them. You address the Chair. Don't look at them. You look at the Chair only.

श्री वीरेन्द्र भाटिया: मैं तो आपको एड्रेस कर रहा हूं।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): बोलिए, बोलिए।

श्री वीरेन्द्र भाटिया: हमने आपसे कहा लालू जी, हमें कोई एतराज नहीं कि आप वहां अपने मकान में रोशनी कर दें, लेकिन एक दिया उत्तर प्रदेश की तरफ भी दिखा देते। एक बात याद रखिए पटना से गाड़ी दिल्ली के लिए वाया लखनऊ ही आती है और हम आपकी गाड़ी रोकने के लिए सक्षम है। आपको दिल्ली आने के लिए वाया लखनऊ ही आना पड़ेगा। मैंने पिछली बार अपने भाषण में आपसे दो बातें कही थीं। ...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: वहां लिखा रहता था। ...(व्यवधान)... लखनऊ में, क्या आप वहीं भाटिया जी हैं?

श्री वीरेन्द्र भाटिया: अब आप देख लीजिएगा, कौन से भाटिया जी हैं? ...(व्यवधान)... एक बात हमने आपसे पिछली बार कही थी। ...(व्यवधान)...

श्री नन्द किशोर यादव (उत्तर प्रदेश): सर, मंत्री जी बार-बार डिस्टर्ब कर रहे हैं।

श्री वीरेन्द्र भाटिया: कम से कम हमें इस लायक तो समझा कि मंत्री जी डिस्टर्ब कर रहे हैं।

श्री लालू प्रसाद: हम इन्हीं का भाषण सुनने के लिए रूके हैं।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): भाटिया जी, आप बोलिए।

श्री वीरेन्द्र भाटिया: उपसभाध्यक्ष जी, मंत्री जी से मैंने पिछली बार जो आग्रह किया था, उसमें आपने एक आग्रह तो स्वीकार किया है, इलेक्ट्रिक स्टेयर्स का, उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। मैंने आपसे आग्रह किया था कि उत्तर प्रदेश से जम्मू में वैष्णों देवी का बहुत बड़ा तीर्थ-स्थल है, वहां बहुत यात्री जाते हैं, जिसके लिए आप कोई डायरेक्ट गाड़ी लखनऊ से और कानपुर से दें। श्री श्रीप्रकाश जी बैठे हैं, कानपुर वालों की भी यह मांग है कि लखनऊ और कानपुर, दोनों जगह से ट्रेन चले, श्रीप्रकाश जी, आप भी सुन लीजिए, मैं आपकी ही बात कर रहा हूँ, कानपुर से कोई गाड़ी वैष्णो देवी, जम्मू के लिए डायरेक्ट जानी चाहिए।

श्री राजीव शुक्ल: वैष्णो देवी के लिए कोई गाड़ी नही चलती ।

श्री वीरेन्द्र भाटिया: वैष्णो देवी तक नहीं चलती, मुझे भी मालूम है, इतना ज्ञान है।

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री श्रीप्रकाश जायसवाल): लालू जी से हम मांग कर चुके हैं। ...(व्यवधान)... लालू जी से अगर छोटे भाई ने मांग कर ली है, तो लालू जी उसको निराश नहीं करते।

श्री वीरेन्द्र भाटिया: चलिए, आपको अग्रिम बधाई। ...(व्यवधान)...

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश): जायसवाल जी आपकी मांग पर जोर दे रहे हैं। ...(व्यवधान)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया: कानपुर से मुरादाबाद के लिए कोई गाड़ी नहीं चल रही, कृपया वह भी दे दें। मैं कानपुर की बात कर रहा हूँ, इसलिए कि श्री श्रीप्रकाश जी आपके पीछे बैठे हैं। यह हमको समर्थन देंगे।

THE VICE-CHAIRMAN (Prof. P.J. KURIEN): Mr. Bhatia, beware of your time.

SHRI VIRENDRA BHATIA: I am coming to the points. लखनऊ इतना महत्वपूर्ण स्टेशन है और आपने लखनऊ स्टेशन के सौन्दर्यीकरण की, अपग्रेड करने की बात नहीं कही। आपने कहा कि विश्व-स्तरीय और स्टेशन बनेंगे, लेकिन लखनऊ की ओर आपकी निगाह नहीं गई। पांच स्टेशन आपने कहे और इन पांच स्टेशनों में लखनऊ का नाम नहीं है। मैंने इसीलिए आपको याद दिलाया कि पटना से गाड़ी लखनऊ होकर ही आती हैं। लखनऊ से एक गाड़ी अजमेर और जयपुर के लिए हमने आपसे अनुरोध किया था कि जयपुर राजस्थान की राजधानी है, वहां के लिए भी आप एक गाड़ी दे दीजिए। ...(व्यवधान)... चलिए, अगर अब है, तो मैं यह मान लेता हूँ और उसके लिए आपको धन्यवाद भी देता हूँ, मगर यह बजट में नहीं हैं।

उपसभाध्यक्ष जी, अब मैं कुछ बात बजट के बारे में करना चाहता हूँ। आपने इसमें सुरक्षा के बारे में कहा, मैं एक बात

की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि जिन गाड़ियों में डेली पैसेंजर्स चल रहे हैं, उनमें अकसर घटनाएं हुआ करती हैं, कृपया उनमें सुरक्षा की ओर अवश्य ध्यान दीजिए। खासकर महिलाएं जहां बैठती हैं। जिनमें डेली पैसेंजर्स चलते हैं, आपको अनुभव नहीं होगा, लेकिन बहुत से लोगों को अनुभव होगा कि जहां डेली पैसेंजर्स के बीच महिलाएं चलती हैं, वे किस प्रकार से अपना समय फब्तियां सुनते हुए काटती हैं। कृपया ऐसी जगहों पर, ऐसी गाड़ियों में जहां पर महिलाएं और डेली पैसेंजर्स होते हैं, वहां एक डिब्बा महिलाओं के लिए आरक्षित कर दें। सुरक्षा की दृष्टि से महिलाओं के लिए आपने जो डिब्बे दिए हैं, क्या आपने कभी उनके बारे में जानने की कोशिश की है? अगर आपने नहीं देखा है, मगर हमने तो देखा है कि महिलाओं के लिए आरक्षित डिब्बे में भी सिपाही स्वयं पुरुषों को बैठाते हैं और स्वयं भी यात्रा करते हैं। आपने सुरक्षा की दृष्टि से यह कहा कि पिछली बार से एक्सीडेंट कम हुए हैं। आपने इसके लिए वर्ष 2005-06 और 2006-07 का तुलनात्मक आंकड़ा दिया है। कृपया आप यह भी बताने का कष्ट करें। कि पिछली बार से ज्यादा जीवन गए हैं या कम गए हैं? यह भी तो ज्ञान होना चाहिए। एक्सीडेंट्स की संख्या कम हुई है, लेकिन क्या जीवन जाने वालों की संख्या अधिक हुई है, चोट खाने वालों की संख्या अधिक हुई है? कृपया इसके बारे में भी बताने का कष्ट करें।

उपसभाध्यक्ष महोदय, जो सौ वर्ष पुराने पुल हैं, जो जर्जर अवस्था में हैं, जिन पर कभी भी एक्सीडेंट हो सकता है, उसको बदलने के लिए क्या कोई योजना आपके पास है? इसको भी आप बताने का कष्ट करें। ट्रेन्स के अंदर, 4 या 6 सिपाहियों से ट्रेन की सुरक्षा नहीं हो पा रही है, सुरक्षा की कारगर व्यवस्था होनी चाहिए और एक बात मैं और कहना चाहता हूं कि जब कभी कोई वारदात हो जाती है, उसकी प्रथम सूचना रिपोर्ट लिखवाने में बड़ी दिक्कत आती है। प्रथम सूचना रिपोर्ट के लिए कोई कहता है कि अगले स्टेशन पर थाना है, वहां जाकर लिखवाइए। इस प्रकार की कोई रिपोर्टिंग चौकी हर स्टेशन पर होनी चाहिए या गार्ड को यह अधिकार प्राप्त होना चाहिए कि वह सूचना देकर उसको अग्रसारित कर दे, इस प्रकार की व्यवस्था होनी चाहिए या स्टेशन को रिपोर्टिंग चौकी मान लिया जाना चाहिए, जिससे कि कोई वहां पर रिपोर्ट लिखा सके।

कभी-कभी RPF और GRP में क्षेत्राधिकार को लेकर बहुत झगड़ा होता है। क्राइम कम दिखाने के लिए GRP कहती है कि यह हमारा अधिकार क्षेत्र नहीं है, यह RPF का अधिकार क्षेत्र है। कृपया यह परिभाषित होना चाहिए कि कौन सा क्षेत्राधिकार GRP का है और कौन सा क्षेत्राधिकार RPF का है।

मेडिकल की व्यवस्था कम से कम बड़े स्टेशनों पर अवश्य होनी चाहिए। आपने अस्पताल की बात की है, दिल्ली और लखनऊ में अस्पताल है, लेकिन अगर शाहजहांपुर और बरेली में कोई बीमार पड़ जाए तो उसकी क्या स्थिति होगी, वह दिल्ली आते-आते या यहां से उतरकर कहां जाएगा। इसलिए इस प्रकार की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए, क्योंकि अब यात्रियों की संख्या बढ़ रही है और कभी-कभी ऐसी नौबत आ जाती है कि यात्री बहुत सीरियस हो जाता है, उसकी कंडीशन बहुत खराब हो जाती है, उस समय उसको मेडिकल ऐड की तुरन्त आवश्यकता होती है। अगर आप हर स्टेशन पर व्यवस्था कर दें, इस प्रकार के महत्वपूर्ण स्टेशनों पर कि कम से कम उसको फर्स्ट ऐड मिल सके, तो आपकी बहुत कृपा होगी।

एक अन्य बात, जो ट्रेनें लेट हो रही हैं, जैसा अभी कहा गया श्रीमती सुषमा स्वराज जी ने कहा कि ट्रेन लेट होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया हो गई है। यह क्यों है, इसकी जवाबदेही तय होनी चाहिए। तकलीफ तब होती है, जब आपके सिस्टम से मालूम ही नहीं हो पाता है। अभी श्री राजीव शुक्ल जी बहुत तारीफ कर रहे थे, लेकिन आपके सिस्टम से मालूम ही नहीं हो पाता है। 5 मिनट पहले वह कहता है, स्टेशन के बाहर कि ट्रेन राइट टाइम है और 5 मिनट बाद जब हम स्टेशन पहुंचते हैं तो मालूम होता है कि ट्रेन 4 घंटे लेट है। यह क्यों है? लालू जी, केवल किराया घटा देने से लोकप्रिय नहीं हुआ जाता, जनता को सुविधाएं चाहिए, बेसिक सुविधाएं चाहिए और मैं आपसे कह रहा हूं कि बेसिक सुविधाओं का अभी भी अभाव है। आप दून एक्सप्रैस के बारे में कह रहे हैं, हमारे यहां हिमगिरी एक्सप्रैस आती है, दून एक्सप्रैस आती है। रात में 7.00 बजे चलने वाली ट्रेन लखनऊ स्टेशन पर सामान्यत: पांच से छ: घंटे लेट पहुंचती है। क्यों लेट आती है, प्रत्येक दिन क्यों ऐसा होता है? जब जानना चाहते हैं तो जवाब यह मिलता है कि बिहार से आने वाली हर ट्रेन लेट हो जाया करती है। यह हमको नहीं, आपको सोचना चाहिए। आप जैसा मैनेजमैंट गुरू और इस प्रकार की बात कही जाती है। मैं जो बात कह रहा हूं वह जिम्मेदारी से कह रहा हूं और मैं साबित कर सकता हूं कि आप किसी व्यक्ति को भेज दें, अगर यही बात

न कही जाए रेलवे अधिकारियों के द्वारा तो जो दंड आप देंगे, मैं उसे स्वीकार करूंगा।

श्री लालू प्रसाद: बिहार में उन्हें कोई बांधकर रख लेता है?

श्री वीरेन्द्र भाटिया: मुझे क्या मालूम, आप अपने अधिकारियों से पूछिए।

मैं आपको बधाई देना चाहता हूं कि आपने महिलाओं को सिपाहियों की भर्ती में और उप निरीक्षक की भर्ती में आरक्षण दिया। यह एक अच्छा और क्रान्तिकारी कदम है, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन इसी प्रकार रेलवे की अन्य नौकरियों में भी महिलाओं को आरक्षण दीजिए और आरक्षण का प्रतिशत, जैसा अभी श्रीमती सुषमा जी ने कहा, भी बढ़ाइए, यह मेरा आग्रह है आपसे। आपने कहा कि आजकल टेलीफोन इंक्वायरी बहुत जल्दी मिलती है, बहुत जल्दी मालूम हो जाता है कि ट्रेन लेट हो रही है, मेरा इस पर थोड़ा सा विरोध है। आधे घंटे, पौने घंटे तक नंबर नहीं मिलते हैं, नंबरों की कमी हो, तो कृपया टेलीफोन कनेक्शन और बढ़ा दीजिए ... (व्यवधान).... मैं 193 की बात कर रहा हूं। आपके ये फोन अक्सर खराब रहते हैं ... (व्यवधान)... हम अपने लखनऊ स्टेशन की बात कर रहे हैं।

मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूं कि जिस प्रकार बड़े शहरों में, रेलवे स्टेशनों के अलावा भी बोर्ड लगा दिए जाएं जिससे देर से आने वाली ट्रेनों के बारे में सूचना मिल जाए, तो इससे जनता को सुविधा होगी। अगर ऐसे display board आप दो-तीन जगहों पर लगा देंगे, तो इससे जनता को सुविधा होगी। हम घर से निकले, हजरतगंज पहुंचे, हमने देखा कि ट्रेन लेट है, तो हम वापस चले गए।

आपने कर्मचारी कल्याण की बात की है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि कर्मचारी कल्याण में कर्मचारियों की सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि उनका जब ट्रांसफर होता है, तो उनके रहने की व्यवस्था नहीं हो पाती, उनके लिए क्वार्टर्स नहीं हैं। इस बारे में आपने अपने रेल बजट में कुछ नहीं कहा है। कृपया, कर्मचारियों की सबसे बड़ी परेशानी यानी ट्रांसफर होने पर रहने की व्यवस्था की समस्या की ओर ध्यान दीजिए।

मैं अंतिम बात कहते हुए अपनी बात समाप्त करूंगा कि सफाई की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। मैं आपको दो घटनाएं बता रहा हूं, अन्यथा न लीजिएगा। मैं 21 फरवरी को लखनऊ से आगरा जा रहा था। जो ट्रेन थी, उसके डिब्बे पर यह भी नहीं नहीं लिखा हुआ था कि यह A.C. II Tier है। ट्रेन का नंबर दूसरा लिखा हुआ था-पटना-लखनऊ-मथुरा एक्सप्रेस, जब कि वह उस दिन लखनऊ से चल रही थी। यह तो खैर छोटी बात है, सबसे बड़ी बात है कि जो बिस्तर मिला, शायद कोई भी साधारण व्यक्ति उसका प्रयोग करना पसंद न करे। यही स्थिति वापसी में भी हुई। उसी दिन रात को मैं वापस आया और यही स्थिति हुई, जब मैंने उससे कहा कि मैं सांसद हूं, तो बड़ी मुश्किल से उसने सबसे अच्छा बिस्तर ढूंढकर मुझे दिया, वह भी ऐसा था कि मुझे कहना पड़ा कि मैं अपना शाल बिछा लूंगा और इसी से काम चला लूंगा। यह केवल मेरी शिकायत नहीं थी, डिब्बे में बैठे हर व्यक्ति ने यही शिकायत की और आपको शायद बुरा लगे, उसका जवाब यह था कि मैं क्या करूं, ठेकेदार जैसा बिस्तर मुझे देता है, मैं आपको वही दे रहा हूं। जब मैंने कंडक्टर से शिकायत की, तो उसने कहा कि यह मेरा अधिकार क्षेत्र नहीं है, अब यह व्यवस्था ठेकेदारों को दे दी गई है। यह तो छोटी ट्रेन थी, उसका यह हाल था। अभी मैं श्री अमर सिंह जी के पिता के देहांत के मौके पर आज़मगढ़ गया था, वहां भी यही स्थिति मैंने देखी। मुझे बाथरूम के बगल में कूपा मिल गया, तो इतनी दुर्गंध आ रही थी और जब मैंने कंडक्टर से कहा कि सफाई क्यों नहीं हुई, तो उसने कहा कि यह मेरा उत्तदायित्व नहीं है। जो आदमी वहां पर बिस्तर दे रहा था, जब मैंने उससे कहा कि बिस्तर गंदा है, तो उसने कहा कि मैं क्या करूं, मुझको जो मिल रहा है, मैं तो वही दूंगा और जब बाथरूम में सफाई की बात कही गई, तो उसने कहा कि यह मेरा उत्तरदायित्व नहीं है, हम तो ठेकेदार के आदमी हैं, हमारा काम सिर्फ यहां पर सबको बिस्तर देने का है। अगर कंडक्टर यह कहता है कि सफाई की व्यवस्था उसका उत्तरदायित्व नहीं है, अटेंडेंट अब वहां पर नहीं है, होगा, तो मिलता नहीं है, बिस्तर देने वाला यह कहता है कि हमारा काम सिर्फ बिस्तर देना है, वह भी ऐसे बिस्तर, जो प्रयोग नहीं किए जा सकते। यह बिस्तर ठेकेदार देता है। किसी की तो responsibility फिक्स होनी चाहिए। आज मैं आपको बधाई देता हूं कि हमारी रेलवे में चूहे मिलते हैं, हमारी रेलवे में कॉकरोच मिलते हैं, इसके लिए सचमुच आप बधाई के पात्र हैं। अखबारों में निकल रहा है कि रेलवे में चूहे मिल रहे हैं। गाड़ी में कॉकरोच तो आप कभी भी देख लीजिए। अपने सैलून से निकलकर उसमें भी यात्रा करने की कोशिश कीजिए, आम लोगों की बात जानने की कोशिश कीजिए। कुछ* से अलग हटकर, कुछ कटु बात सुनने की कोशिश

कीजिए, क्योंकि वह आपको सही बात नहीं बताते हैं। हम आपको सही बात बताना चाहते हैं। ये नहीं बताएंगे। लालू जी, हम तो हमेशा कहेंगे कि "निन्दक नियरे राखिए"। आपने अब तक बहुत तरक्की की है, अगर सही बात जानिएगा तो आप और आगे तरक्की कीजिएगा। हम तो यही चाहेंगे कि आप और आगे बढ़ें। आपको जब "मैनेजमेंट गुरू" का खिताब मिलता है और आपको विदेशों में आमंत्रित किया जाता है तो हमें भी गर्व होता है कि हमारे रेल मंत्री को विदेशों के लोग आमंत्रित करते हैं। लेकिन कहीं ऐसा न हो कि वह सिर्फ दिखावा ही रह जाए। अंत में मैं सिर्फ यही कहता हूं कि हम विद्यार्थी जीवन में नीरज की एक कविता गाया करते थे कि "स्वप्न झड़े फूल से, लुट गए श्रृंगार सभी, कारवां गुज़र गया और हम गुबार देखते रहे" कहीं यही न हो जाए। धन्यवाद।

SHRI PENUMALLI MADHU (Andhra Pradesh): Sir, the hon. Railway Minister, while presenting the Railway Budget for 2008-09, has made an announcement of a staggering surplus amounting to Rs. 25,000 crores. Sir, in this Budget, earnings from tariff have shown a double digit growth. The focus is on increasing yields, rather than increasing fariff per ton of freight. Overloading of wagons inevitably leads to higher maintenance cost; they result in safety problems as well. The financial figures given by the Railway Minister look very healthy, but are these being achieved by jeopardising the future of the Railways?

On business development, as never before, formation of a strategic business unit within the organisation that would deal with the crucial bulk movement business is advocated. All these years, the Railways lost a good part of the freight tariff including bulk movement to the road network. Here, I would like to draw his attention to one aspect. If we see the growth pattern in the rail and road transport, it is alarming. At the time of Independence, in 1951, our railway transport was 80 per cent and the road transport was 20 per cert.The road transport that was 20 per cent, now, it is almost reversed. Today, if we see the growth trend in freight, the Railways' share has come down to 35 per cent. It indicates that the share of the road sector, which was 20 per cent during 1951, has increased to 65 per cent. Now, the road sector's share is 65 per cent and the Railways' share is 35 per cent. Sir, if we see the trend in cargo loaded, we find that it has increased. Sir, during all this period, it has increased by 9.1 times. There is 4.5 times increment in passenger transport. Sir, the road transport has increased much more. The cargo carried by the road sector has increased by 67.6 times; passenger transport is ...*(Interruptions)*...

श्री रूद्रनारायण पाणि (उड़ीसा): सर, एक भी कैबिनेट मंत्री नहीं है। ... (**व्यवधान**).... सर, राज्य मंत्री तो हैं, लेकिन कैबिनेट मंत्री नहीं हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): There is the Minister of State for Railways. ....*(Interruptions)*.... you are unnecessarily raising this issue. ....*(Interruptions)*... The MoS is here. ...*(Interruptions)*...

श्री रूद्रनारायण पाणि: सर, यह व्यवस्था का प्रश्न है। ..(**व्यवधान**)... ठीक है सर, कैबिनेट मंत्री आ गए हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): No, no; there is nothing like that. Take your seat...*(Interruptions)* ...The Minister of State for Railways is here. That is enough...*(Interruptions)*...

SHRI PENUMALLI MADHU: Sir, during the last three years, if we properly analyses the performance of the Railways and the road sector with respect to cargo and passenger transport, we will find that the performance of the road sector has increased many times. The road sector's share has increased by so many times, whereas the Railways share has not increased to that extent. The Railways' cargo share has increased by 9.1 times and the

*Expunged as ordered by the Chair.

passenger share has increased by 4.5 times. The cargo carried by the road sector has increased by 67.6 times and the road sector passenger share has increased by 101 times.

Sir, when the hon. Railway Minister was presenting the Budget in the other House, there was a huge protest from every quarter....*(Interruptions)*... Sir, when our Railway Minister was presenting the Budget in the other House, I myself witnessed irrespective of their support to this Government, were protesting for some of the projects which were neglected in this Budget...*(Interruptions)* ... Sir, I am getting disturbed. Sir when people start speaking to you, I am unable to speak...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): I am listening. Anyhow, it is being recorded also. Please proceed.

SHRI PENUMALLI MADHU: Sir, what was the motive of the Railway Minister when he presented the Railway Budget? What were the points then raised by different political parties? They were expecting announcement of many more projects, by the Minister it has not taken place. Starting from Congress party, the CPI (M), and to all other parties, all protested.

Why has it happened—the huge gap between the requirements of the future and the requirements of the existing network. In the rail network, in new projects, in new trains, in doubling and on suburban network on all these issues, there was a big demand raised by Members of Parliament. I would like to draw your attention to the growing economy. But, the railway network is not growing in meeting the requirements of the growing economy. Sir, while the increase in GDP and population is 12 times and 3.1 times respectively, the railway network increased by only 1.2 times. Since the railway network is not increasing, it is not meeting the requirements of the freight and of the passengers. The railway network is not meeting the requirements of the freight movement also. During the period from 1951 to 2002, the road network expanded by 8 times while the railway network is only 1.2 times.

The requirement is more, but the Railways is unable to meet the requirements of the people, Sir, I am not against any increase in the road network. But, the Planning Commission discussed about the railway network, its functioning, freight, passenger traffic and everything else concerning the railways. In their recommendation, in 1980, the Planning Commission advised the Railways to increase the rail transport to 72 per cent by 2000. They also suggested that the share of freight movement by road should be at 30-35 per cent. But, in spite of this recommendation—since 1985-onwards, now we are in 2008—there is no substantial increase as far as the railway transport and network is concerned. This is the biggest problem we are facing now.

Sir, I have already mentioned about the growth of population and the railway network. When the population is growing, when the economy is growing the railway network is not growing commensurately with the pace of the economy. This is one of the biggest problems that the entire transport sector is facing. The budgetary support to Railways is being reduced. If we see, up to Fifth Plan, the share of Railways was 7.9 per cent. In the Ninth Plan it was reduced to 5.6 per cent and in the Tenth Plan it was reduced to 4 per cent. So, Plan after Plan the budgetary support for Railways has gone down. This is the biggest problem that we are facing now. Sir, because of this situation the people of India and the economy are facing a peculiar problem. Sir, urban population during this period has grown by 4.6 times and urban travel has increased by 6.9 times. Sir, Mumbai, Kolkata, Chennai, Delhi, and all such areas we are unable to meet the need of urban transport. The percentage of share of movement of

urban commuters has reduced drastically. Sir in 1986 the Railways decided not to participate further in the movement of urban commuters. This has further aggravated the situation. Sir, the situation is very alarming. When urban commuter growth is taking place in such an alarming way, the Railways in this Budget have not totally attended to this problem of the urban commuters.

I would like to mention another important things that are mentioned in this Budget. The most dangerous thing in this Budget, which is to be opposed tooth and nail, is the privatisation. In a big way, the Railways are intending to privatise. It is not only in the normal operations but in safety operations also the proposals of privatisation are being given. Sir, railway production units, manufacturing electric units, diesel locos, coaches, wheel, axle workshops, and in all such areas privatisation is being mooted. Sir, privatisation of maintenance workshops is being mooted. Sir, It is not only proposed but in Secunderabad *(Time-bell)* Division, two workshops with 805 workers were going to be closed at the end of this month on 31st March. Signalling and Communication workshops are being closed. Printing presses are to be sold. Printing of tickets, money receipts, valuable documents, all forms and books, which are meant for the Railways use, are going to be privatised. Sale of all Railways; quarters is proposed. *(Time-bell)* Sir, Rs. 20,000 crores or more could be earned out of this sale which is being proposed. Sir, maintenance of station sanitation, railway tracks, railway buildings, electrical equipments, wagon cleaning, water supply, and all such operations are going to be privatised.Commercial activities like catering services are already privatised. Goods booking, parcel booking *(Time-bell)* Sir, I will take five more minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): No, no, listen, Mr. Madhu.

SHRI PENUMALLI MADHU: Computer reservation, privatisation of railway hospitals is proposed. Even Railways hospitals are put on sale.

THE VICE- CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please listen to me also. Your party has only 42 minutes. You have already taken 28 minutes. So please conclude and there are two more speakers.

SHRI PENUMALLI MADHU: No, no I have not taken 28 minutes.

I was supposed to speak for 15 minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF P.J. KURIEN): You were supposed to speak for 15 minutes and you have taken 19 minutes. So, please wind up.

SHRI PENUMALLI MADHU: Privatisation of schools and colleges is very dangerous. In the coming days, they are going to cancel all types of concessions. Even concessions given to season ticket-holders are going to be stopped. *(Time-bell)* It is very dangerous.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): There are two more speakers from your party. Please stop. *(Time-bell)* I will given you only one minute.

SHRI PENUMALLI MADHU: Sir, in the State of Andhra Pradesh, the most important railway line proposed is from Kovvur to Bhadrachallam, and another is in one of the most backward areas where a proposed line is there from Pedda Palli Kareemnagar to Nizamabad. These important lines, even the Yerragintla-Nadyal lines, even the Gadwal-Raichur line, all these lines are for years pending. Nothing has been announced. Sir, from Kurnool to Hyderabad, they asked for an inter-city express. That is also not given. The entire Andhra Pradesh, irrespective of political parties, all MPs last year pleaded with the Minister that our

State is neglected. This should not happen.

THE VICE- CHAIRMAN: (PROF. P.J. KURIEN): Okay, now Mr. Sanjay Raut. *(Time-bell)*

No, please sit down. No, no please...

SHRI PENUMALLI MADHU: Sir, in Kazipet Railway authorities *(Time-bell)*...transferred Pilots and Guards to Secundrabad and Vijayawada which is very dangerous making Khazipet unimportance. My submission...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): That is okay. Now, you stop. Nothing. It will not go on record.

SHRI PENUMALLI MADHU: My submission to the Railway Minister is, at least something should be done to the State of Andhra Pradesh. Kovvur-Bhadrachallam line and Intercity Express from Kurnool to Hyderabad are most important. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Sanjay Raut, you have requested for two minutes. But you have taken three minutes and after that Shri Gandhi Azad will speak.

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र): सर, यह जो रेल बजट आया है, इसने आम लोगों को जरूर खुशी दी है, फिर भी चुनौतियां कम नहीं हुई हैं। मैं आपके माध्यम से इस रेल बजट के बारे में दो महत्वपूर्ण बातें रखना चाहता हूं। निश्चित रूप से यह पॉपुलर बजट है, लेकिन इसके ऊपर आगे क्या अमल होगा, यह कोई नहीं कह सकता। देखने, सुनने और पढ़ने में यह बजट बहुत अच्छा है, लेकिन एक्सपर्ट्स तो कहते हैं कि यह रेल मंत्रालय का भूल-भुल्लैया है, इसमें कुछ पॉजिटिव एंगल जरूर है। पहली बात तो यह है कि इसमें 11वीं पंचवर्षीय योजना के लिए तय किए गए लक्ष्यों की झलक मिलती है और 11वीं पंचवर्षीय योजना के मसौदे की स्वीकृति के बाद, सरकार का यह पहला रेल बजट है। दूसरी बात यह है कि लोक सभा के चुनाव एकदम नजदीक हैं और यूपीए की सरकार का यह आखिरी बजट है। इसलिए सरकार की पूरी कोशिश है कि इसका अधिकतम लाभ लिया जाए। इन्हीं पहलुओं को ध्यान में रखकर रेल बजट का मूल्यांकन होना चाहिए।

दूसरा मुद्दा यह है कि इस बजट में लालू जी ने हर वर्ग को खुले हाथों रेवड़ी बांटने की कोशिश की है, लेकिन यह ऐसा रेल बजट है जो बदकिस्मती से रेलवे को कोई तोहफा नहीं दे रहा है। इस बजट से इंडियन रेलवे को क्या मिला है, यह कोई नहीं बता सकता है। यह बात सही है कि किराए जरूर कम हुए हैं लेकिन जनरल क्लास में कोई किराया कम नहीं हुआ है। दूसरे क्लास में जो कमी हुई है, उसके पीछे भी दरियादिली का जो दिखावा किया जा रहा है वह ठीक नहीं है। दूसरे क्लास में रेलवे के रेट इतने ज्यादा हैं कि उसे अपनी ऑक्युपेंसी बढ़ाने के लिए किराए घटाने ही होंगे। लेकिन बजट में किराया घटा दिए जाने का मतलब यह नहीं है कि रेल मंत्री किसी दूसरे तरीके से आपकी जेब में हाथ नहीं डालेंगे। ऐसे तरीके बाद में आजमाए जाते हैं। पिछली बार रिटर्न रिजर्वेशन पर पंद्रह सौ रुपए का जो बोझ लादा गया था, वह इस बार वापस नहीं लिया गया है। एक बार फिर नई गाड़ियों और दूसरी योजनाओं का ऐलान किया है, लेकिन इससे बैक लॉग बढ़ता जाएगा। यह तभी खत्म होगा, जब इन्फ्रास्ट्रक्चर उसके काबिल हो। डेडिकेटिड फ्रेट कॉरीडोर की बात कही है, जबकि हमें एक ठोस प्लान और डेड लाइन की जरूरत है। यह नहीं बताई गई है। रेलवे मंत्री ने विजन 2025 की बात कही है,लेकिन मुझे संदेह है कि इससे रेलवे की दशा और दिशा में कोई बदलाव आएगा। कमी बहुत सी है, अगर आज इस विजन के साथ हम काम करें तो रेलवे की बीमारियों का इलाज हो सकता है। लालू जी ने एक बार फिर सरप्लस का ढिंढोरा पीटा है, लेकिन इसमें बकाया फंड का भी हिस्सा होता है, यह भी ध्यान रखना चाहिए। इसमें लालू जी की प्रसिद्ध एकाउंटिंग कलाकारी से इंकार नहीं किया जा सकता है। रेलवे का फ्रेट मूवमेंट अच्छी रफ्तार से बढ़ रहा है, लेकिन यह मत भूलिए कि फ्रेट में उसका हिस्सा भी 80 फीसदी हुआ करता था, जो अब 20 या 25 फीसदी हो रहा है। इकॉनॉमी की दृष्टि से अच्छा बिजनेस दे रहा है, लेकिन मुकाबला कड़ा है और खुद को बेहतर बनाए बिना हमेशा अच्छे दिन बनाए जाने की उम्मीद की जा सकती है। मेरा एक छोटा सा सवाल है कि इस रेल बजट में मंत्री जी ने महाराष्ट्र को क्या दिया है? लगता है कि लालू जी रेल बजट बनाते समय महाराष्ट्र को भूल गए हैं। मुंबई के लिए "गो मुंबई" योजना दरअसल महाराष्ट्र के लिए "नो मुंबई"

योजना बनाई गई है। राज्य के छोटे-छोटे करीब चालीस प्रकल्प प्रलंबित हैं, लेकिन इसके लिए कोई ठोस आश्वासन नहीं है। मुंबई के लगभग सत्तर लाख लोकल यात्रियों को भी लालू जी ने कुछ नहीं दिया है। लगता है कि लालू जी ने महाराष्ट्र को निराश किया है, लेकिन उन्होंने एक काम अच्छा किया है, इसलिए हम उनकी सभी गलतियां भूल सकते हैं। लाइसेंसधारी कुलियों की गैंगमेन के पदों पर सरकार जो नियुक्ति करने जा रही है, यह स्वागत योग्य फैसला है और मैं इसका स्वागत करता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): How much time will you take Mr. Azad?

श्री गांधी आजाद (उत्तर प्रदेश): धन्यवाद श्री उपसभाध्यक्ष महोदय। कितना टाइम है सर?

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन): आपकी पार्टी का सिक्सटीन मिनट है।

श्री गांधी आजाद: सिक्सटीन मिनट तो बोलने दीजिए।

श्री दिग्विजय सिंह (झारखंड): बाकी समय हमें दे दीजिएगा।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): He will speak for sixteen mintues. After that, we can adjourn the House सिक्सटीन मिनट इनकी पार्टी का टाइम है।

श्री गांधी आजाद: सबसे पहले तो मैं माननीय मंत्री जी का स्वागत करता हूं।... (**व्यवधान**)..

श्री माननीय सदस्य: हाउस कब तक चलेगा?

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): He will speak for sixteen minutes. Then, we will adjourn the House for the day. Let him complete his speech.

6.00 P.M.

श्री गांधी आजाद: शुरू करूं?

उपसभाध्यक्ष: बोलिए।

श्री गांधी आजाद: सबसे पहले तो मैं माननीय मंत्री जी का स्वागत करता हूं। स्वागत इसलिए कि यात्री किराया बढ़ाए बगैर, माल भाड़े में भी कोई वृद्धि नहीं किए बगैर उन्होंने जो मुनाफा दर्शाया है, यह एक स्वागत योग्य कदम है। यात्री किराए में वृद्धि न करने की बजाय यात्री गाड़ियों की लंबाई और डिब्बों की संख्या में बढ़ोत्तरी करके 2004-2005 से 2007-08 के दौरान 3000 अतिरिक्त डिब्बों को जोड़कर 2000 करोड़ की अतिरिक्त आय की वृद्धि किया जाना एक अच्छा कदम है। पार्सल-विज्ञापन, लैंड लीज़ आदि से रेलवे आय में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। चार वर्षों में अन्य कोचिंग और विविध आय 1900 करोड़ रुपए से बढ़ कर 4700 करोड़ रुपए होने की सम्भवना है। यह एक अच्छा कदम है।

माननीय मंत्री जी ने यात्री गाड़ियों में discharge free green toilet की व्यवस्था करने की जो बात कही है। यह एक अच्छी बात है। उन्होंने यह बात पीछे भी कही है, लेकिन यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है। मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि जो बात कहा करें, जो घोषणा किया करें, उनको पूरा करने का भी प्रयास किया करें, तब जाकर उन घोषणाओं की पूर्ति पर जनता को लाभ हो सकेगा।

रेल यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता रखने की बात कही गई है। वर्षों से खाली 5700 सिपाहियों और 993 उप-निरीक्षकों की रिक्तियों को मई 2008 तक पूरा कर लिया जाएगा, यह भाषण में कहा गया है। लेकिन क्या मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि ये रिक्तियां कितने वर्षों से खाली पड़ी है और आपके कार्यकाल में कितनी नियुक्तियां की गई? यह आपके भाषण में स्पष्ट नहीं है। 973 नए पद सृजित किए गए हैं, लेकिन यह कब तक भर दिया जाएगा, स्पष्ट नहीं है। इन सुरक्षा बलों की कमी कि वजह से आज रेलवे में सबसे ज्यादा जहर-खुरानी का प्रकोप दिखाई देता है कि जहर-खुरानी के द्वारा हमारे यात्रियों को ठगने का काम किया जाता है। यह सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश और बिहार, जहां के माननीय मंत्री जी हैं, वहां ज्यादा दिखाई देता है। इस पर रोक लगाने का प्रयास किया जाए।

लाइसेंसधारी कुली को ग्रैंगमैन और चतुर्थ वर्ग में अन्य पदों पर नौकरी देने की बाम कही गई है। यह अच्छी बात है, लेकिन भाषण में इसका कोई आकलन नहीं किया गया है। क्या मैं मंत्री जी से जान सकता हूं कि कुल लाइसेंसधारी कुलियों की संख्या कितनी है और आपके रेलवे विभाग में उनको गैंगमैन और चतुर्थ श्रेणी में भरने के लिए रिक्त संख्या कितनी है तब जो पता लगाया जा सकता है कि इनको किस अनुपात में और कितने समय में भर दिया जाएगा। अगर यह काम किया जा रहा है तो यह एक सराहनीय कदम है।

साथ-ही-साथ विद्यार्थियों को, वरिष्ठ महिला नागरिकों को अशोक चक्रधारियों को जो रियायत दी गई है, वह एक स्वागतयोग्य कदम है अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के आरक्षण की बात भाषण में कही गई है कि 99 प्रतिशत भर लिया गया है, लेकिन मेरी जानकारी के अनुसार प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी और तृतीय श्रेणी में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के पद रिक्त पड़े हुए हैं। इसलिए मैं मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों की रिक्तियों को भी विशेष अभियान चला कर भरने का काम किया जाए।

जहां तक कर्मचारियों के कल्याण की बात है, हमारे साथी ने भी बताया, मैं भी स्पष्ट करना चाहता हूं कि कर्मचारियों को मकान तक नहीं मिलता है। मैं आज़मगढ़ से आता हूं। आज़मगढ़ के 50 प्रतिशत से ज्यादा कर्मचारियों को मकान की व्यवस्था नहीं है, इसलिए वे दूर-दूर से, दूसरे जिलों से आते हैं, जिससे संचालन की देखरेख में उनको असुविधा होती है।

महोदय, यात्रियों की सेवा के लिए जो गाड़ियां चलाई गई हैं, उनमें 10 गरीब रथ, 53 नई गाड़ियां हैं, 16 गाड़ियों का विस्तार किया गया है, 11 गाड़ियों के फेरों में वृद्धि की गई है यह अच्छी बात है। लेकिन जो 53 नई गाड़ियां चलाई गई हैं, उसमें स्पष्ट है कि जो नौ नई गाड़ियां चलाई जाएंगी, उनमें से आठ आमान परिवर्तन के बाद और एक गाड़ी नई लाइन बनने के बाद चलाई जाएगी। फिर यह भी सुनिश्चित नहीं है कि इसी सत्र में वह आमान परिवर्तन हो जाएगा या नहीं अथवा नई लाइन बिछ जाएगी या नहीं। अगर ऐसा सुनिश्चित ही नहीं है तो हमारी समझ से नौ गाड़ियों की उद्घोषणा करना एक तरह से धोखा देने का काम है ऐसा नहीं करना चाहिए। आगे कोई दूसरे मंत्री आते या आप स्वंय आगे के कार्यकाल में मंत्री आते और यह आमान परिवर्तन और नई लाइन बिछाने का कार्य हो जाता, जब इन नई गाड़ियों की बात की जाती तो शोभा भी देता।

इसी तरह से 16 गाड़ियों के विस्तार की बात कहीं गई है, उसमें भी कहा गया है कि तीन गाड़ियों का विस्तार आमान परिवर्तन के बाद होगा। इसके कहने का क्या मतलब है?

महोदय, मैं आज़मगढ़ जनपद से आता हूं और आज़मगढ़ जनपद अब जिला ही नहीं है, कमिश्नरी हेडक्वार्टर भी है कई बार मैं इस सदन के माध्यम से रेल बजट पर यह डिमांड करता आया हूं कि आज भी, जबकि कई गाड़ियों का विस्तार हो चुका है, वहां पर एक ही प्लेटफॉर्म है इसलिए मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि कम से कम वहां पर दो प्लेटफॉर्म और बनाए जाएं, ताकि यात्रियों को सुविधा दी जा सकें। साथ ही वहां पर एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफॉर्म पर जाने के लिए कोई ऊपरगामी पुल नहीं है, इसलिए मैं यह निवेदन भी करूंगा कि वहां पर अतिरिक्त प्लेटफॉर्म बनाए जाने के साथ-साथ एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफॉर्म पर जाने के लिए पुल बनाने की भी कृपा की जाए।

महोदय, एक निवेदन मैं और करूंगा, इस चीज की डिमांड कई बार की गई है कि आज़मगढ़ से मुम्बई जाने के लिए मंत्री जी गाड़ी दें। गोदान एक्सप्रेस के लिए अब सातों दिन कर दिए गए हैं इसके लिए आज़मगढ़ की जनता की ओर से मैं मंत्री जी का स्वागत करना चाहता हूं। साथ ही साथ उन्होंने दिल्ली से जो कैफियत एक्सप्रैस चलाने का काम किया, इसके लिए भी मैं वहां की जनता की ओर से उनका स्वागत करना हूं। लेकिन बार-बार अनुरोध करने पर भी उन्होंने उसे कोलकाता तक के लिए नही बढ़ाया है, जबकि रोज हजारों यात्री कोलकाता जाते हैं। वहां से सौ किलोमीटर आगे बनारस जा करके, दूसरे साधनों से उन्हें गाड़ियों को पकड़ना पड़ता है। इसलिए मैं माननीय मंत्री जी से पुरजोर निवेदन करता हूं कि आज़मगढ़ से कोलकाता जाने के लिए चाहे वाया छपरा होते हुए या फिर वाया शाहगंज, बनारस हेते हुए गाड़ी को कोलकाता पहुचाने का काम करें। आज़मगढ़ की जनता की ओर से मैं यह मांग करता हूं और आशा ही नहीं विश्वास करता हूं कि माननीय मंत्री जी इसको पूरा करने का काम अवश्य करेंगे।

कैफियत एक्सप्रेस, जो दिल्ली से चलाई जाती है, इसमें इतनी भरमार होती है कि दो-दो महीने की टिकट एडवांस बुक हो जाती है। लोग दो महीने पहले ही उसे बुक कर लेते हैं, इसलिए अब उसमें जगह नहीं रह गई है। मेरा निवेदन है कि उसमें डिब्बों की संख्या को और बढ़ाया जाए। दूसरी बात, मेरे बार-बार अनुरोध करने पर भी आज तक उसमें पैंट्रीकार नहीं लगवाया गया, इसलिए जो प्राइवेट लोग उसमें खाने-पीने का सामान बेचने का काम करते हैं, एक तो वे घटिया किस्म का खाना देते हैं,ऊपर से उसके ऊंचे से ऊंचे दाम भी लेते हैं। इससे वहां के यात्रियों को बहुत परेशानी होती है मैं निवेदन करूंगा कि इस कैफियत एक्सप्रैस में पैंट्रीकार लगाने का काम भी किया जाए।

महोदय, एक फतेहपुर जिला है, जो इलाहाबाद और कानपुर के बीच में पड़ता है। वहां पर हमारे कई सांसद भी हैं। हमने और वहां के उन सांसदों ने लिख करके भी दिया है कि इस रूट पर जो दस राजधानी गाड़ियां चलती हैं, उनमें से एक भी राजधानी गाड़ी का एक या दो मिनट का वहां पर स्टॉप या ठहराव नहीं है। इससे वहां के लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है और उन राजधानी गाड़ियों का लाभ उनको नहीं मिलता है। इसलिए मेरा निवेदन है कि जो 10 गाड़ियां चलती हैं, उनमें से किसी एक गाड़ी का ठहराव फतेहपुर रेलवे स्टेशन पर करने की कृपा करें, यह हमारा निवेदन है।

महोदय, इसके साथ-ही-साथ आज़मगढ़ से लखनऊ आने के लिए कोई इंटरसिटी गाड़ी नहीं है, जिससे लोगों को काफी परेशानी होती है। इसलिए मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से यह मांग करता हूं कि आज़मगढ़ से लखनऊ के लिए जो एक लखनऊ राजधानी है और वहां पहुचने के लिए जिस तरह बनारस से लखनऊ आने के लिए इंटरसिटी है, उसी तरह से आज़मगढ़ से लखनऊ आने के लिए एक इंटरसिटी ट्रेन चलाने की डिमांड करता हूं। आशा ही नहीं, भरोसा करता हूं कि माननीय मंत्री जी उसे पूरा करने का काम करेंगे।

महोदय, सम्भल एक बहुत पुराना स्टेशन है, जो अंग्रेजों के जमानों का बनाया हुआ है। दिल्ली से सम्भल कोई भी पैसेंजर ट्रेन नही चलती है मेरा निवेदन है कि दिल्ली से सभ्भल वाया मुरादाबाद होते हुए ट्रेन चलाने की भी योजना रखी जाए।

मैं पुन: निवेदन करता चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी जो कहते हैं, शायद उन घोषणाओं को वह भूलते भी जाते हैं जैसा कि पहले बजट में उन्होंने कहा था, कुल्हड़ के प्रयोग के विषय में। कुछ दिनों तक कुल्हड़ बड़ी तेजी से चला और हमारे प्रजापति समाज के लोग भी, गरीब लोग कुल्हड़ के इस प्रयोग से बहुत खुश हुए वह उस दौरान तो चला था, लेकिन आज ट्रेन में एक भी कुल्हड़ दिखाई नहीं देता है। इसीलिए मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि जो घोषणाएं वह करते हैं, उनकी मॉनिटरिंग भी वह किया करें कि वे घोषणाएं पूरी होती हैं कि नहीं होती हैं या वे घोषणाएं केवल घोषणाएं ही रह जाती हैं इसलिए अगर इन घोषणाओं को पूरा करने का प्रयास किया जाए,...(समय की घंटी) तो माननीय मंत्री जी का कार्य स्वागतयोग्य होगा। उन्होंने जो एक कविता कही है कि "नई कथनी, नई करनी, नई एक सोच लाए हैं, तरक्की की नई पारसमणि हम खोज जाए हैं।" लेकिन घोषणाएं न पूरी होने के कारण मैं उसमें एक लाइन जोड़ना चाहता हूं कि "पुरानी सभी घोषणाओं को छोड़ आए हैं"। इन्हीं शब्दों के साथ मैं मंत्री जी का पुन: धन्यवाद करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIAN): The House is adjourned to meet tomorrow at 11. a.m.

The House then adjourned at thirteen minutes past six of the clock till eleven of the clock on Tuesday, the 11th March, 2008.

GMGIPMRND—3134RS—13-08-2009.